हरिभूमि

रेवाड़ी भूमि

रोहतक, रविवार, 26 अक्टूबर 2025

तापमान

अधिकतम 34.0 डिग्री
न्यूनतम 11.2 डिग्री

12 हाइवे पर बंद नहीं हुआ अवैध कटों का खेल, लटकी...

12 मौसम के कारण साफ होने लगा प्रदूषण...

खबर संक्षेप

दहेज उत्पीड़न मामले में एक आरोपी दबोचा

रेवाड़ी। पुलिस ने दहेज उत्पीड़न के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। विवाहिता की शिकायत के आधार पर मॉडल टाउन थाना पुलिस ने दोनों पक्षों के बीच सुलहनामा कराने के प्रयास किए थे। कई बार काउंसलिंग कराने के बाद भी बातचीत सिरे नहीं चढ़ी तो पुलिस ने 23 अक्टूबर को ससुराल पक्ष के लोगों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया। इस मामले में पुलिस ने गुरूग्राम के भोंडसी की रेयान एंक्लेव कॉलोनी निवासी प्रवीन को गिरफ्तार कर लिया। बाद में उसे पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

सड़क हादसे का आरोपी चालक गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने सड़क हादसों के बाद फरार एक वाहन चालक को गिरफ्तार किया है। सेक्टर-6 धारूहेड़ा थाना पुलिस ने 28 सितंबर को हुए हादसे के बाद फरार वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज किया था। आरोपी मौके से फरार होने में कामयाब हो गया था। इस मामले में केस दर्ज करने के बाद फरीदाबाद डबुआ कॉलोनी निवासी सुधीर महतो को गिरफ्तार कर लिया। उसे मामले की तफ्तीश में शामिल करने के बाद पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

बिजली गुल रहने से ग्रामीण परेशान

बावल। क्षेत्र के गांवों में बिजली के अघोषित कटों ने लोगों को परेशान किया हुआ है। हरचंदपुर निवासी राजू, प्रवीन, विनोद, अजय व विशाल आदि ने बताया कि रात के समय गांव में बिजली गुल हो जाती है। इसके बाद घंटों बिजली नहीं आती। गर्मी के मौसम में ग्रामीणों को बिजली के बना भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। ग्रामीणों ने निगम अधिकारियों से समस्या के समाधान की मांग की है। लोग कई दिनों से बिजली की समस्या का सामना कर रहे हैं।

मारपीट मामले में दो महिलाएं गिरफ्तार

रेवाड़ी। गंगायचचा अहीर में मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के मामले में पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पीड़ति के बयान पर 8 सितंबर को आरोपियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। पीड़ति ने मारपीट करने और धमकी देने के आरोप लगाए थे। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में गंगायचा अहीर निवासी आशा और चंचल को गिरफ्तार कर लिया। तफ्तीश में शामिल करने के बाद दोनों को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

मारपीट मामले में दो आरोपी किए गिरफ्तार

कोसली। थाना कोसली पुलिस ने झाल में मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के मामले में दंपति को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने अस्पताल में उपचाराधीन घायल के बयान पर 9 अक्टूबर को आरोपियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। उसने मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के आरोप लगाए थे। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में झाल निवासी कृष्ण और साहिल को गिरफ्तार कर लिया।

पीएसआर एक्ट के तहत एक गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा ने पंजाब शेड्यूल रोड एक्ट के तहत तीन साल पहले दर्ज किए गए मामले में एक महिला को गिरफ्तार किया है। थाना रामपुरा पुलिस ने डीटीपी के पत्र के आधार पर 4 जुलाई 2022 को कई आरोपियों के खिलाफ पीएसआर एक्ट के तहत केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने बास बटौड़ी निवासी प्रेम देवी को गिरफ्तार कर लिया। तफ्तीश में शामिल करने के बाद उसे पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया। इस मामले में दो आरोपियों को पुलिस ने एक दिन पहले ही गिरफ्तार किया था।

पूर्वांचल के आस्था के छठ महापर्व का शुभारंभ,आज व्रतधारी करेंगे खरना का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

सूर्य देव की उपासना के चार दिवसीय महापर्व छठ पूजा का शनिवार को नहाय-खाय के साथ शुभारंभ हो गया। महापर्व के पहले दिन कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को महिलाओं ने व्रत का संकल्प लिया और पूरी शुद्धता के साथ लौकी की सब्जी, अरवा चावल व चने की दाल का प्रसाद भी बनाया। घरों में व्रती के भोजन के बाद ही परिवारों के बाकी सदस्यों ने भोजन ग्रहण किया। शास्त्रों में इसका विशेष संयोग माना जाता है। पूर्वांचलवासियों ने शहर के बाजारों में पूजन सामग्री की खरीददारी की। दुकानदारों ने भी पूजा सामग्री की पूरी व्यवस्था की हुई है। नाईवाली सब्जीमंडी, मोती चौक व धारूहेड़ा बाजार में पूर्वांचलवासियों की पूजन सामग्री खरीदने के लिए काफी भीड़ रही।

बाजारों में पूजन सामग्री खरीदने के लिए पूर्वांचल वासियों की लगी भीड़

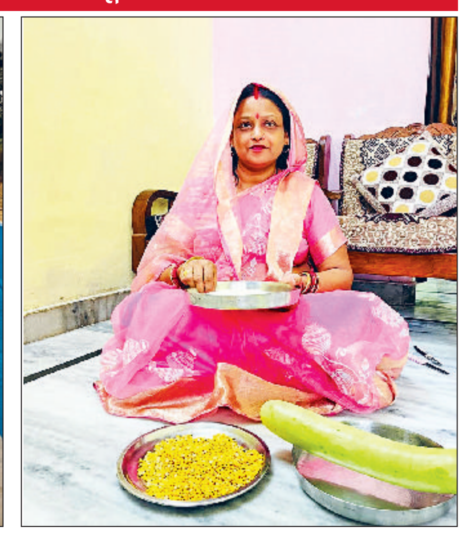

रेवाड़ी। कोनसीवास रोड पर अस्थाई घाट तैयार करते हुए पूर्वांचल के लोग तथा नहाय-खाय के साथ छठ महापर्व शुरू करते हुए मधुबनी से वंदना ठाकुर। *फोटो : हरिभूमि*

अस्थायी घाट पर सजावट का कार्य शुरू

सूर्य को अर्ध्य देने के लिए सोलहराही तालाब, कोनसीवास रोड, ढालियावास, नई अनाजमंडी सहित धारूहेड़ा में दर्जनों स्थानों पर अस्थाई घाट भी बनाए गए हैं। छठ पूजा समितियों के पदाधिकारियों ने शनिवार को अस्थाई तालाबों के कार्य का जायजा लिया। रविवार से इन तालाबों में पानी भरने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। अस्थाई घाट पर टैंट लगाकर सजावट का कार्य भी किया जा रहा है। इन तालाबों में खड़े होकर ही व्रतधारी सूर्य को अर्ध्य देंगे। 27 अक्टूबर को संध्याकालीन अर्घ्य व 28 अक्टूबर की प्रातः सूर्य को अर्घ्य देंगे। इसके बाद आस्था के महापर्व छठ पर्व का समापन किया जाएगा। जिले में कई वर्षों से पूर्वांचल के लोग छठ पूजा का आयोजन करते आ रहे हैं।

महापर्व छठ का मंगलवार को होगा समापन

छठ पर्व को आस्था का महापर्व माना जाता है। रविवार को खरना पर्व होगा। 27 अक्टूबर को संध्याकालीन और 28 अक्टूबर की प्रातः उगते हुए सूर्य को अर्ध्य देकर श्रद्धालु छठ पर्व का समापन करेंगे। श्रद्धालु भगवान सूर्य की प्रतिमा की उपासना करेंगे। पुराणों में भी छठ पर्व की महत्ता का उल्लेख मिलता है। शिव पुराण, ब्रह्म वैवत पुराण, भविष्य पुराण, मार्कण्डेय पुराण के साथ कई अन्य श्रुतियों व उपनिषदों में भी इस पर्व के महत्व का वर्णन किया गया है। भगवान श्रीराम व श्रीकृष्ण के कालखंड में भी श्रद्धापूर्वक भगवान भास्कर की पूजा की जाती थी। मगध के साथ ही अन्य कई प्राचीन महत्वपूर्ण राज्यों के इतिहास के साथ इस लोकपर्व की कड़ियां जुड़ी हुई हैं। पांडवों ने भी अपना राज्य प्राप्त करने के लिए छठ पूजा की थी। जिले में पूर्वांचल मूल के हजारों परिवार पिछले कई दशकों से निवास करते आ रहे हैं। डेढ दशक पूर्व तक यह परिवार अपना छठ उत्सव मनाने के लिए पूर्वांचल जाते थे, लेकिन इन परिवारों ने संगठित होकर समितियों का गठन कर पूर्वांचल समाज को एक साथ जोड़ने का काम किया। पूर्वांचल के गठित संगठनों ने जिले में प्रति वर्ष छठ महोत्सव का आयोजन करने का निर्णय लिया। पिछले छह से सात वर्षो से जिले में छठ पर्व का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

- 26 अक्टूबर रविवार को खरना पर्व होगा
- 27 अक्टूबर को संध्याकालीन सूर्य को अर्ध्य देकर पूजा करेंगे
- 28 अक्टूबर को उगते हुए सूर्य को अर्ध्य देकर छठ पूजा का समापन करेंगे

संघर्ष समिति ने कल से रात को भी धरना देने का लिया निर्णय

अस्पताल निर्माण की गेंद सीएम के पाले में सकारात्मक जवाब से टल सकता है टकराव

नरेन्द्र वत्स ▶▶ रेवाड़ी

रामगढ़ भगवानपुर में अस्पताल निर्माण की मांग को लेकर चार माह से अधिक समय से धरना दे रही संघर्ष समिति को केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह से उम्मीद की संभावनाओं पर पहले ही पानी फिर गया था। प्रतिनिधिमंडल की बीते दिनों सीएम नायब सिंह सैनी से हुई मुलाकात के बाद आंदोलनकारियों की उम्मीद तो जिंदा हो गई है, लेकिन गांव में अस्पताल निर्माण की संभावनाएं काफी कम नजर आ रही हैं। क्षेत्र के लोगों की निगाहें अब 11 नवंबर को सीएम के साथ समिति की वार्ता पर नजरें टिकी हुई हैं। अगर सीएम की ओर से सकारात्मक जवाब दिया जाता है, तो इससे उनका केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह के साथ टकराव भी शुरू हो सकता है। अस्पताल निर्माण की मांग पर सीएम की सहमति राव के लिए बड़े झटके से कम नहीं होगी। जून माह में सीएम नायब सिंह के रेवाड़ी आगमन से पहले रामगढ़ भगवानपुर के लोग उनके गांव में ही 200 बेड के अस्पताल निर्माण की उम्मीद लगाए हुए थे। केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत की ओर से ग्रामीणों को आश्वासन दिया गया था कि वाटर टैंकों के निर्माण के लिए अगर ग्राम पंचायत सरकार को जमीन मुहैया कराएगी, तो अस्पताल का निर्माण भी उनके गांव में ही कराया जाएगा। सीएम के आगमन पर ग्रामीणों को इस बात की भनक लग गई थी कि अस्पताल किसी और स्थान पर बनाने की योजना पर विचार किया जा रहा है। इसके बाद ग्रामीण केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत से मिलने के लिए उनके निवास पर गए, तो राव दिल्ली में आवश्यक कार्य होने के कारण उन्हें समय नहीं दे पाए थे। नाराज ग्रामीणों ने राव के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। सीएम दौरे के तीसरे दिन से ही धरना शुरू कर दिया था। बाद में महापंचायत का आयोजन किया गया, जिसमें बाहर से आए कुछ लोगों ने राव और उनकी बेटी आरती के प्रति अशोभनीय भाषा का इस्तेमाल किया। राव की ओर से उसी समय अपनी ओर से रामगढ़ भगवानपुर में अस्पताल निर्माण की संभावनाओं को शून्य कर दिया गया था।

रेवाड़ी। शनिवार को धरने पर बैठे रामगढ़ भगवानपुर के ग्रामीण। *फोटो : हरिभूमि*

सरकार पर दबाव बनाने का प्रयास

सीएम से मुलाकात के बाद संघर्ष समिति की 11 नवंबर को उनके साथ फिर से वार्ता निर्धारित हुई है। दबाव बनाने के लिए संघर्ष समिति ने एक ओर जहां 27 अक्टूबर से धरना दिन-रात का शुरू करने का निर्णय लिया गया है, तो दूसरी ओर क्रमिक अनशन भी शुरू किया जा रहा है। अस्पताल निर्माण को लेकर एक तरह से समिति और राव के बीच ठन चुकी है। अगर ऐसे में सीएम समिति के प्रतिनिधिमंडल को अस्पताल निर्माण का आश्वासन देते हैं, तो यह सीधे तौर पर राव इंद्रजीत सिंह के लिए बड़े झटके से कम नहीं होगा।

शहर में ही अस्पताल निर्माण पर जोर

धरना देने वाले ग्रामीणों की ओर से लगातार राव को ही निशाने पर रखा गया, जिस कारण राव ने अस्पताल जिला मुख्यालय पर ही बनाने की खुलकर पैरवी करना शुरू कर दिया। शहर के नागरिक अस्पताल की बिल्डिंग को तोड़कर नए सिरे से अस्पताल बनाने की योजना को अमलीजामा पहनाना शुरू कर दिया। चूंकि आरती राव प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री हैं, इसलिए स्वास्थ्य विभाग की ओर से नागरिक अस्पताल की जगह पर ही नया अस्पताल बनाने की तैयारी की जा रही है। सीएमओ की ओर से नई बिल्डिंग बनने तक अस्पताल को शिफ्ट करने के लिए जगह की तलाश की जा रही है।

पुरानी फाइलों को अचानक खोलना लोकतंत्र के लिए खतरा: महेंद्र छाबड़ा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

कांग्रेसी नेता महेंद्र छाबड़ा ने कहा कि कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह के खिलाफ 12 साल पुरानी फाइलों का अचानक खोलना लोकतंत्र के लिए खतरे का संकेत है। कांग्रेस जनता की आवाज को दमदार तरीके से उठा रही है, जिसे दबाने के लिए भाजपा औछे हथकंडे अपना रही है।

एक बयान में छाबड़ा ने कहा कि राव नरेंद्र सिंह प्रदेशाध्यक्ष बनने के बाद से ही भाजपा के निशाने पर आ चुके हैं। उनके नेतृत्व में प्रदेश कांग्रेस पूरे जोश और उत्साह के साथ भाजपा की खामियों को जनता के सामने उजागर कर रही है। कांग्रेस पार्टी निरंतर जनविरोधी नीतियों के खिलाफ संघर्ष तेज कर रही है। ऐसे में राव नरेंद्र की पुरानी फाइलें खोलकर एफआईआर दर्ज कराना लोकतंत्र के लिए खतरे की घंटी से कम नहीं है। भाजपा एफआईआर और दूसरे तरीकों से विपक्षी नेताओं को डराने का प्रयास कर रही है, परंतु कांग्रेस का संघर्ष बिना किसी डर या दबाव के लगातार जारी रहेगा। पार्टी के पदाधिकारी शांतिपूर्ण और व्यवस्थित ढंग से संगठन को मजबूत बनाने की दिशा में कार्य करते रहेंगे।

ई-रिक्शा चोरी करने वाला आरोपी गिरफ्तार, की जा रही कार्रवाई

रेवाड़ी। शहर थाना पुलिस ने ई-रिक्शा चोरी करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान मोहल्ला धक्का बस्ती राजीव नगर निवासी रितु उर्फ नितिन उर्फ राजू के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की गई ई-रिक्शा को बरामद कर लिया है। मोहल्ला चौधरीवाड़ा निवासी सोनू ने गत 22 अक्टूबर को अपनी ई-रिक्शा को घर के बाहर खड़ा किया था, जिसे कोई व्यक्ति चोरी करके ले गया है। पुलिस ने शुक्रवार को मामले में संलिप्त एक आरोपी मोहल्ला रितु उर्फ नितिन उर्फ राजू को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश करके न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

नशीला पदार्थ हेरोइन सप्लाई करने का आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। सीआईए की टीम ने नशा गतिविधियों पर रोकथाम अंतर्गत चलाए जा रहे अभियान के तहत गांव गोकलगढ़ के पास बाइपास रोड पर एक बुलेरो गाड़ी में दो नशा तस्कर सद्दाम हुसैन निवासी पटौदी जिला गुरुग्राम व मौहम्मद आलम उर्फ बिट्टू निवासी गांव सिकारपुर जिला बुलन्द शहर यूपी को 8.40 ग्राम नशीला पदार्थ हेरोइन सहित धर दबोचा था। मादक पदार्थ को कब्जे में लेकर आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की संबंधित धाराओं के तहत थाना सदर में मामला पंजीबद्ध कर आगामी जांच अधिकारी एसआई देवेंद्र कुमार ने बरामद नशा तस्करी के स्रोत का पता लगाते हुए सप्लाई करने वाले आरोपी जयप्रकाश उर्फ मोनू निवासी गांव खानपुर जिला गुरुग्राम को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपी को पेश अदालत करके पूछताछ के लिए दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

स्मैक बेचने के मामले में एक और आरोपी गिरफ्तार

कोसली। सीआईए मादक पदार्थ स्मैक बेचने के मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। इस मामले में एक महिला आरोपी को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है। गत 2 अक्टूबर को सीआईए कोसली को सूचना मिली थी कि निर्मला निवासी गांव धामलाका हाल आबाद सेक्टर-1 रेवाड़ी नशीला पदार्थ स्मैक बेचने का काम करती है। वह गुरुग्राम से रोडवेज बस में अपने साथ नशीला पदार्थ स्मैक लेकर आ रही है। सूचना पर सीआईए कोसली ने तुरंत एनएच-71 स्थित पेट्रोल पंप के नजदीक नाकाबंदी करके आरोपी महिला को काबू किया तो उसने अपना नाम निर्मला निवासी गांव धामलाका बताया तलाशी के दौरान उसके कब्जे से 80 ग्राम स्मैक बरामद हुई। इस मामले में पुलिस ने एक और आरोपी गांव धामलाका निवासी संजीव को भी गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश करने के बाद जेल भेज दिया।

मकान से नकदी व कागजात चोरी का आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। थाना सदर पुलिस ने गांव बीकानेर में एक मकान से नकदी व अन्य कागजात चोरी करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की गई रकम से 34 हजार रुपए की राशी बरामद की है। 3 अक्टूबर को गांव बीकानेर निवासी महेन्द्र ने पुलिस शिकायत में बताया था कि उसने नाई की दुकान कर रखी है। 29 अगस्त को उसने अपनी नाई की दुकान का कुछ सामान दो कट्टो में डाल कर अपने मकान के दरवाजे के साथ रखा था। जिसमें एक कट्टे मे छोटे बैग में उसके 35 हजार रुपये व अन्य जरूरी कागजात रखे थे। जो पीछे से उसका पड़ोसी अरविन्द माथुर उन्हें चोरी करके ले गया है। जिस पर पुलिस ने थाना सदर रेवाड़ी में चोरी का मामला दर्ज करके जांच शुरू की थी। जो जांच के बाद पुलिस ने शुक्रवार को मामले में संलिप्त आरोपी राजस्थान के जिला झुंझुनू के उदयपुरवाटी हाल आबाद गांव बीकानेर निवासी अरविन्द माथुर को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की गई रकम से 34 हजार रुपये की राशि बरामद की है।

केरल में आशा वर्कर्स पर पुलिस कार्रवाई की निंदा

कल प्रदर्शन करेंगी जिले की आशा वर्कर्स

रेवाड़ी। केरल की आशा कार्यकतार्ओं पर क्रूर पुलिस कार्रवाई की घटना की केन्द्रीय श्रमिक संगठन एआईयूटीयूसी के राष्ट्रीय महासचिव शंकर दास गुप्ता ने कड़ी निंदा की है। एक बयान में गुप्ता ने कहा कि ऑल इंडिया यूनाइटेड ट्रेड यूनियन सेंटर की अखिल भारतीय कमेटी, तिरुवनंतपुरम में राज्य के मुख्यमंत्री के सरकारी आवास, क्लिफ हाउस के सामने शांतिपूर्ण ढंग से प्रदर्शन कर रही केरल की आशा कार्यकतार्ओं पर की गई क्रूर पुलिस कार्रवाई की कड़ी निंदा करती है। इस बर्बरता के दोषी पुलिस अधिकारियों को कड़ी सजा देने की मांग करती है। केरल में लंबे समय से चल रहे आशा आंदोलन को दबाने के राज्य सरकार के फासीवादी रवैये की निंदा करते हुए नाराजगी जताई।

कल प्रदर्शन के बाद दिया जाएगा ज्ञापन

एआईयूटीयूसी के जिला सचिव शेरसिंह मीरपुर ने बताया कि 24 अक्टूबर को एआईयूटीयूसी की जिला कमेटी की तत्कालीन एक ऑनलाइन बैठक हुई, जिसमें आशा कार्यकर्ता यूनियन की जिला प्रधान सुषमा यादव और जिला सचिव संतोष यादव भी शामिल थीं। इसमें फैसला लिया गया की 27 अक्टूबर को आशा कार्यकर्ता यूनियन की ओर से एक रोष प्रदर्शन किया जाएगा, जिसमें अपनी लंबित मांगों के अलावा केरल में आशा कार्यकतार्ओं पर हुए बर्बर पुलिस हमले के खिलाफ रोष प्रदर्शन करते हुए ज्ञापन दिया जाएगा।

तैयारी सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर 31 अक्टूबर को होगी रन फॉर यूनिटी

श्रद्धा व उमंग के साथ मनाया जाएगा गुरु तेग बहादुर का 350वां शहीदी दिवस

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

डीसी अभिषेक मीणा ने कहा कि हरियाणा सरकार हर वर्ग के मान-सम्मान को मद्देनजर रखते हुए भावी पीढ़ी में संस्कारों का समावेश करते हुए जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से जागृत कर रही है। महान विभूतियों की जयंती व शहादत को पूरे श्रद्धा व उमंग के साथ मनाते हुए युवा शक्ति को उनके आदर्शों को आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। डीसी ने सरकार के महत्वाकांक्षी कार्यक्रमों के आयोजन को लेकर शनिवार को लघु सचिवालय के सभागार में आयोजित बैठक में अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

रेवाड़ी। कार्यक्रमों को लेकर अधिकारियों को दिशा-निर्देश देते डीसी।

वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ पर होंगे कार्यक्रम

डीसी ने बताया कि देश के राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के 150 वर्ष पूर्ण होने पर देशभर में जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि 7 नवंबर 1875 को राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम का लेखन किया गया। ऐसे में केंद्र सरकार द्वारा वंदे मातरम गीत के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में चार फेज में विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित होंगे, जोकि 7 नवंबर से शुरू होंगे। उन्होंने बताया कि पहले फेज 7 नवंबर से 14 नवंबर तक, दूसरा फेज 19 जनवरी 2026 से 26 जनवरी, तीसरा फेज 7 अगस्त 2026 से 15 अगस्त तथा चौथा फेज 1 नवंबर से 7 नवंबर 2026 तक रहेगा। इस अवसर पर डीडीपीओ एच.पी बंसल, डीआईपीआरओ दिनेश कुमार, डीएफएससी डा. अशोक कुमार, मेरा युवा भारत के जिला युवा अधिकारी सुमित यादव व एआईपीआरओ पवन यादव सहित अनेक अधिकारीगण मौजूद थे।

रन फॉर यूनिटी में दिखेगा भाईचारे का संदेश

डीसी मीणा ने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर 31 अक्टूबर को रन फॉर यूनिटी में जिला वासियों की प्रभावी जन भागीदारी रहेगी। इसमें जिलावासी एक साथ देश की एकता व अखंडता का संकल्प लेते हुए दौड़ेंगे। इस दौरान स्कूल व कॉलेज के विद्यार्थीगण, खिलाड़ी, मेरा युवा भारत के स्वयंसेवक, सीनियर सिटीजन, महिलाएं तथा आम नागरिक समाज में एकता व भाईचारा का संदेश कायम रखने का संकल्प लेते हुए रन फॉर यूनिटी में भागीदार बनेंगे। उन्होंने बताया कि सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में केंद्र सरकार द्वारा देशभर में 31 अक्टूबर से 25 नवंबर तक जिला स्तरीय पदयात्राएं भी आयोजित की जाएंगी।

गुरु तेग बहादुर जी को समर्पित यात्रा 14 नवंबर को

डीसी ने बताया कि प्रदेश में श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में निबंध लेखन व सांस्कृतिक कार्यक्रम सहित निर्धारित रूट अनुसार यात्राएं निकाली जाएंगी, जोकि कुरुक्षेत्र में 24 नवंबर को संपन्न होंगी। उन्होंने बताया कि 14 नवंबर को फरीदाबाद से शुरू होकर यह यात्रा रेवाड़ी जिले में पूर्ण श्रद्धा एवं उमंग के साथ प्रवेश करेगी। यात्रा में अधिक से अधिक जिले वासियों की भागीदारी रहेगी।

ईपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे ही पैसे निकालना कितना सही

अपडेट | बिजनेस डेस्क

- पहले सारा पैसा निकालने पर नहीं मिलती मासिक पेंशन, पेंशन के लिए लगातार दस ईपीएस का हिस्सा रहना जरूरी
- ईपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी ईपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रहेगी

अगर आप नौकरीपेशा हैं और ईपीएफ (ईपीएम) में योगदान करते हैं, तो आपके वेतन का एक हिस्सा ईपीएस यानी एंप्लाईज पेंशन स्कीम में भी जाता है। बहुत से लोग यह सोचते हैं कि नौकरी छोड़ने या बीच में ब्रेक आने पर इस पैसे को फौरन निकाल लेना बेहतर है, लेकिन क्या वाकई ईपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे पैसे निकाल लेना सही फैसला है? कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने हाल ही में ईपीएस से जुड़े कुछ बदलाव किए हैं, हालांकि, इन बदलावों का असर पेंशन पाने की उम्र यानी 58 साल की एलिजिबिलिटी पर नहीं पड़ेगा। पेंशन पाने के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक लगातार ईपीएस का हिस्सा रहना जरूरी है। अगर किसी सदस्य की नौकरी चली जाती है और वह ईपीएस (ईपीएस) के लिए योगदान जारी नहीं रखना चाहता, तो वह 10 साल पूरे होने से पहले अपने सारे पैसे निकाल सकता है. पहले यह फाइनल सेटलमेंट नौकरी चले जाने के 2 महीने बाद किया जा सकता था, लेकिन अब इसके लिए 2 महीने नहीं, बल्कि 36 महीने यानी 3 साल तक इंतजार करना होगा, यानी ईपीएफओ ने अब ईपीएस के पैसे निकालना पहले की तुलना में ज्यादा मुश्किल बना दिया है, इस बदलाव का उद्देश्य यह है कि अगर ईपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी ईपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रह सके।

10 साल से पहले पैसे निकालने का असर

ईपीएफओ के नियमों के मुताबिक आप लगातार नौकरी के 10 साल पूरे होने से पहले ईपीएस से पैसे निकाल सकते हैं। लेकिन ऐसा करने पर आप आगे चलकर मिलने वाली पेंशन के लिए एलिजिबल नहीं रह जाएंगे। यानी रिटायरमेंट के बाद ईपीएस के जरिये मिलने वाली मंथली पेंशन की सुविधा खत्म हो जाएगी।ईपीएफओ के अनुसार रिटायरमेंट के समय पेंशन पाने की एलिजिबिलिटी के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक ईपीएस में सदस्य रहना जरूरी है। इसका मतलब यह है कि जल्दबाजी में पैसे निकालने से आप अपनी लंबी अवधि की आर्थिक सुरक्षा खो सकते हैं।

क्या कहते हैं आंकड़े

दिलचस्प बात यह है कि ईपीएफओ के आंकड़ों के मुताबिक करीब 75 प्रतिशत सदस्य 4 साल की सर्विस के भीतर ही पूरा पेंशन अमाउंट निकाल लेते हैं, ऐसे में उन्हें भविष्य की पेंशन और आर्थिक सुरक्षा का लाभ नहीं मिल पाता है।

फैमिली पेंशन का भी नुकसान

अगर कोई सदस्य 10 साल से पहले पैसे नहीं निकालता है और उसका निधन हो जाता है, तो उसके परिवार को अगले 3 साल तक पेंशन का लाभ मिलता है, लेकिन अगर सदस्य ने पूरे पैसे निकाल लिए हैं, तो परिवार यह लाभ नहीं ले सकता। यही वजह है कि ईपीएफओ ने ईपीएस की सदस्यता को 10 साल पूरे होने तक जारी रखने के लिए नियमों में बदलाव किए हैं। ईपीएफओ का कहना है कि ईपीएस के पैसे निकालने के लिए दो महीने की जगह 36 महीने इंतजार करने का नया प्रावधान इसीलिए लाया गया है ताकि सदस्यों की 10 साल की एलिजिबिलिटी पूरी हो जाए और उनके परिवार को भी पेंशन का लाभ मिल सके।

किन हालात में निकाल सकते हैं पैसे

हालांकि कुछ खास परिस्थितियों में पैसे निकालने का फैसला सही भी हो सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी व्यक्ति की आमदनी अच्छी खासी है या उसने पहले से अपनी रिटायरमेंट प्लानिंग की हुई है, जिसके चलते वह रिटायरमेंट के बाद रेगुलर इनकम या फेमिली पेंशन पाने के लिए ईपीएस के भरोसे नहीं है, तो जरूरत पड़ने पर अपने पैसे निकाल सकता है। लेकिन जिनकी आय सीमित है और दूसरा कोई रिटायरमेंट प्लान नहीं है, तो उनके लिए ईपीएस को जारी रखना भविष्य की सुरक्षा के लिहाज से बेहतर विकल्प है। ईपीएस पेंशन स्कीम लंबे समय तक आर्थिक सुरक्षा देने के लिए बनाई गई है। अगर आप 10 साल पूरे होने से पहले पैसा निकालते हैं, तो भविष्य में पेंशन नहीं मिलेगी। साथ ही फेमिली पेंशन के तौर पर परिवार को मिलने वाली सुरक्षा का लाभ भी चला जाएगा। इसलिए नौकरी में ब्रेक या अस्थायी परेशानी की हालत में जल्दबाजी करने की बजाय सोच-समझकर फैसला करने में ही समझदारी है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- यह दूसरी करेंसीज में इनवेस्ट करने वालों के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है
- पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12% पैसा सोने में निवेश करते थे
- अब बाजार की तेजी को देखते हुए निवेशक 18 से 22% सोने में निवेश करने लगे

- गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला
- जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती जाती है

सोने में निवेश सबसे सुरक्षित, लेकिन जरूरत से ज्यादा भी ठीक नहीं

सोने को शुरू से ही निवेश का सबसे सुरक्षित माध्यम माना जाता रहा है। इसने निवेशकों को कभी रुसवा नहीं किया। पिछला रिकॉर्ड देखा जाए तो सोने ने कभी भी निगेटिव रिटर्न नहीं दिया। यह चाहे किसी भी रूप में हो निवेशकों को मालामाल करता रहा है। हालांकि बाजार के जानकारों का कहना है कि सोने में निवेश करना सही है, लेकिन यह जरूरत से ज्यादा नहीं होना चाहिए। हाल फिलहाल में सोने में हुई बढ़ोतरी को देखते हुए निवेशकों ने अपने पोर्टफोलियो में इसकी हिस्सेदारी बढ़ा दी है। पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12 फीसदी पैसा सोने में निवेश करते थे, लेकिन अब निवेशक 18 से 22 फीसदी सोने में निवेश करने लगे हैं। यहां तक तो ठीक हैं, लेकिन इससे अधिक रिस्की हो सकता है। इस साल आई जबर्दस्त तेजी की वजह से सोना चर्चा में है। 21 अक्टूबर को 5 फीसदी की गिरावट के बावजूद गोल्ड ने निवेशकों को मालामाल किया है। सवाल है कि आखिर गोल्ड में इतनी तेजी की क्या वजह है? इस सवाल का जवाब पाने के लिए हमें ग्लोबल इकोनॉमी में गोल्ड की भूमिका को समझना होगा।

1944 का ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट

सेकेंड वर्ल्ड वॉर के बाद 1944 में ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट हुआ। तब अमेरिकी डॉलर में दुनिया के दूसरे देशों की करेंसीज की कीमत तय करने पर सहमति बनी। डॉलर की कीमत गोल्ड पर आधारित थी। 35 डॉलर एक औंस सोने के बराबर था। इस व्यवस्था से ग्लोबल इकोनॉमी को तब स्थिरता मिली, जब उसे इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। लेकिन, अमेरिकी इकोनॉमी का आकार बढ़ने पर सरकार ने ज्यादा डॉलर छापे। एक समय ऐसा आया जब कुल डॉलर का मूल्य गोल्ड रिजर्व से ज्यादा हो गया।

1960 के दशक में एक कमोडिटी के रूप में उभरा गोल्ड

1960 का दशक आते-आते इस असंतुलन की अनदेखी करना मुश्किल हो गया। 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन ने एक बड़ा कदम उठाया। उन्होंने डॉलर को गोल्ड में बदलने की सुविधा बंद कर दी, जिससे ब्रेटन वुड्स सिस्टम खत्म हो गया। इससे मॉनेटरी सिस्टम में गोल्ड की तय भूमिका खत्म हो गई। इसके बाद गोल्ड एक कमोडिटी बनकर रह गया। इसकी कीमतों पर मार्केट फोर्सेज का असर पड़ना शुरू हो गया, लेकिन, निवेश के सुरक्षित विकल्प को लेकर इसकी भूमिका बनी रही।

केंद्रीय बैंकों ने समझा गोल्ड का महत्व

जैसे-जैसे डॉलर कमजोर होता गया और इनफ्लेशन बढ़ता गया, वैसे-वैसे गोल्ड की अपील बढ़ती गई। जब कभी डॉलर में बड़ी कमजोरी आई या इनफ्लेशन में उछाल आया, गोल्ड निवेश के भरोसेमंद जरिया के रूप में सामने आता रहा। क्राइसिस के समय भी इसकी चमक बनी रही। इससे यह माना गया कि जब सबकुछ अनिश्चित दिख रहा तो तब भी गोल्ड में वेल्थ

की वैल्यू घटने से बचाने की क्षमता है। इसके बाद दुनिया के केंद्रीय बैंकों ने गोल्ड खरीदना शुरू कर दिया। इसका मकसद विदेशी मुद्रा भंडार का डायवर्सिफिकेशन था।

गोल्ड में तेजी की बड़ी वजहें

बीते कुछ सालों में गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला है। जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती है। इससे यह दूसरी करेंसीज में इनवेस्ट करने वाले इनवेस्टर्स के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है। बॉन्ड्स की रियल यील्ड ने भी इसमें अहम भूमिका निभाई। जब रियल यील्ड घट जाती है तो गोल्ड की अपील बढ़ जाती है। जब हम साल 2025 के अंत के करीब है, गोल्ड 4000 डॉलर प्रति औंस से ऊपर है। गोल्ड की तेजी में डॉलर में कमजोरी, बॉन्ड्स की कम रियल यील्ड और सेंट्रल बैंकों के बीच गोल्ड की ज्यादा डिमांड का हाथ है। इसके अलावा जियोपॉलिटिकल टेंशन का असर भी इसमें शामिल है।

इकोनॉमी में गोल्ड की बढ़ती भूमिका

गोल्ड में तेजी न सिर्फ इनवेस्टर्स के लिए अहम है बल्कि इसका आर्थिक महत्व भी है। उदाहरण के लिए भारत में आरबीआई के रिजर्व में डॉलर के अलावा गोल्ड भी है। जब गोल्ड में तेजी आती है तो आरबीआई के डॉलर रिजर्व की वैल्यू बढ़ जाती है। इससे इंडिया की फाइनेंशियल पोजीशन मजबूत होती है। गोल्ड का असर भारत में कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स (सीपीआई) पर भी पड़ता है। उदाहरण के लिए सितंबर 2025 में गोल्ड की ज्यादा कीमतों की वजह से इंडिया के कोर इनफ्लेशन में मामूली उछाल देखने को मिला, जबकि फूड की कीमतों में गिरावट आई। इससे पता चलता है कि गोल्ड की भूमिका इकोनॉमी में कितनी ज्यादा है।

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद है। इसकी कई वजहें हैं। रियल यील्ड लगातार कम बनी हुई है। सेंट्रल बैंक के बीच गोल्ड की डिमांड बनी हुई है, लेकिन, इतिहास यह बताता है कि ऐसी तेजी के बाद गोल्ड दोबारा नई ऊंचाई पर पहुंचने से पहले कंसॉलिडेशन फेज में रहता है। इसलिए गोल्ड में तेजी जारी रहने की संभावना है, लेकिन इनवेस्टर्स को इसमें उतार चढ़ाव के लिए तैयार रहना चाहिए।

एक सीमा से ज्यादा निवेश सही नहीं

कई इनवेस्टर्स इनफ्लेशन से बचाव, करेंसी में कमजोरी और ग्लोबल इकोनॉमी में अनिश्चितता को देखते हुए गोल्ड में निवेश कर रहे हैं। लेकिन, गोल्ड में बहुत ज्यादा निवेश से आपके पोर्टफोलियो पर इसकी कीमतों में तेजी या कमजोरी का असर पढ़ना शुरू हो जता है। ऐसे में बॉन्ड बड़ा रोल निभाता है। अनिश्चित समय में तो गोल्ड का प्रदर्शन अच्छा रहता है लेकिन, जब सबकुछ ठीक चल रहा होता है तो क्या होता है? बॉन्ड्स पोर्टफोलियो में स्टैबिलिटी लाता है। साथ ही इंटरेस्ट के रूप में इससे रेगुलर इनकम होती है। यह फायदा गोल्ड में नहीं है। ऐसे इनवेस्टर्स जिन्हें रेगुलर कैश की जरूरत पड़ती है, उनके डायवर्सिफायड पोर्टफोलियो में बॉन्ड्स का होना जरूरी है।

ऑफर देखकर न ललचाएं ज्यादा जरूरत होने पर ही पर्सनल लोन उठाएं, वरना यह बढ़ा सकता है परेशानी

पर्सनल लोन एग्रीमेंट पर साइन से पहले चेक करें कुछ बातें, वरना पड़ेगा पछताना

अलर्ट | बिजनेस डेस्क

> “बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं जो करती हैं परेशान, ऐसे में ऐसी शर्तों पर पहले से ही नजर दौड़ा लें, दिक्कत नहीं होगी

कई बार हमें अचानक पैसों की जरूरत पड़ जाती है चाहे मेडिकल इमरजेंसी हो, शादी का खर्च या फिर किसी जरूरी ट्रिप का खर्चा। ऐसे में पर्सनल लोन एक आसान रास्ता लगता है। कुछ क्लिक या एक फॉर्म भरकर पैसा खाते में आ जाता है, लेकिन यही आसानी कई बार बाद में परेशानी का कारण भी बन जाती है, अगर आपने लोन एग्रीमेंट के कागजों को ध्यान से नहीं पढ़ा। बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं, जिन पर नजर न गई तो बाद में पछताना पड़ सकता है।

प्रीपेमेंट और फोरक्लोजर चार्जेज

कई लोग सोचते हैं कि लोन जल्दी चुका देंगे तो ब्याज बच जाएगा, लेकिन हर बैंक या फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन इसकी इजाजत नहीं देता। अगर आप लोन तय समय से पहले चुका देते हैं, तो आपको प्रीपेमेंट या फोरक्लोजर चार्जेज देने पड़ सकते हैं, जो आम तौर पर बाकी बचे लोन अमाउंट का 2% से 5% तक होता है। इसलिए साइन करने से पहले यह जरूर समझ लें कि आपका बैंक या एनबीएफसी पर्सनल लोन जल्दी चुकाने पर कितने चार्जेज वसूलेगा।

लेट पेमेंट और डिफॉल्ट पेनॉल्टी

एक भी ईएमआई छूटना आपके क्रेडिट स्कोर को नुकसान पहुंचा सकता है, लेकिन इसके साथ ही, बैंक लेट पेमेंट पर पेनाल्टी चार्ज भी वसूलते हैं। कुछ बैंक एक तय रकम लेते हैं, तो कुछ बाकी बचे ईएमआई अमाउंट का एक प्रतिशत। यही वजह है कि देर से भुगतान करने पर ब्याज से ज्यादा रकम चुकानी पड़ सकती है। इससे बचने का सबसे आसान तरीका है ऑटो डेबिट ऑर्डर लगाना, ताकि ईएमआई समय पर कट जाए।

छिपे हुए प्रोसेसिंग व सर्विस चार्जेस

बैंक जब लोन का ब्याज दर बताते हैं, तो वह तो साफ होता है, लेकिन बाकी के चार्जेस अक्सर ध्यान नहीं जाते। जैसे प्रोसेसिंग फीस, डॉक्युमेंटेशन फीस और जीएसटी आदि। यहां तक कि कुछ बैंक फोरक्लोजर लेटर या लोन स्टेटमेंट के लिए भी शुल्क वसूलते हैं। इसलिए हमेशा साइन करने से पहले बैंक से यह पूछें कि कुल मिलाकर आपकी जेब से कितनी रकम कटेगी। आखिरकार, जो लोन अमाउंट आपको मिलेगा, वह इन चार्जेस के बाद थोड़ी कम ही होगी।

ब्याज दर में बदलाव से जुड़ी शर्तें

अगर आपने फ्लोटिंग रेट वाला पर्सनल लोन लिया है, तो यह समझना जरूरी है कि ब्याज दर में बदलाव कब और कैसे होगा। कुछ बैंक हर तिमाही में रेट बदलते हैं, तो कुछ साल में एक बार. अगर ब्याज दरें बढ़ती हैं तो आपकी ईएमआई भी बढ़ सकती है। इसलिए एग्रीमेंट में दिए गए इस क्लॉज को जरूर पढ़ें ताकि बाद में बढ़ी हुई किस्त देखकर झटका न लगे।

बीमा और क्रॉस-सेलिंग की चाल

कई बैंक पर्सनल लोन के साथ एक बीमा पॉलिसी भी जोड़ देते हैं, जो बेरोजगारी, बीमारी या मृत्यु की स्थिति में लोन को कवर करती है। सुनने में यह सुरक्षा जैसा लगता है, लेकिन अक्सर यह बीमा वैकल्पिक होता है. कुछ बैंक इसे अनिवार्य बताकर जोड़ देते हैं। इसलिए साइन करने से पहले यह साफ कर लें कि क्या यह बीमा जरूरी है, और क्या उसकी प्रीमियम लागत वाजिब है।

हर शर्त को समझना बेहद जरूरी

पर्सनल लोन एक सुविधाजनक विकल्प जरूर है, लेकिन इसके साथ जुड़ी हर शर्त को समझना बेहद जरूरी है। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान न देने से बाद में भारी ब्याज, चार्जेस या अन्य पेनाल्टी झेलनी पड़ सकती है। इसलिए अगली बार जब भी आप किसी लोन डॉक्यूमेंट पर साइन करें, तो जल्दबाजी न करें। हर पेज, हर क्लॉज को ध्यान से पढ़ें और समझें। आखिरकार, लोन से राहत तभी मिलेगी जब आप इसके हर नियम को समझदारी से निभाएंगे।

घर में कितनी रख सकते हैं चांदी कमाई पर कैसे लगता है टैक्स

बिजनेस डेस्क

निवेश की दुनिया में सोना के साथ एक और एसेट क्लास सबसे ज्यादा चर्चा में है, जो है चांदी। वजह इसमें मिल रहा सुपर रिटर्न। साल 2025 में रिटर्न के मामले में चांदी ने सोने को पीछे छोड़ दिया है। इस साल चांदी का रिटर्न 73फीसदी से अधिक रहा है। इससे निवेशकों के बीच चांदी की डिमांड बढ़ रही है, चाहे वह किसी भी फॉर्मेट में हो। तो यहां 2 बातें समझ लेना जरूरी है कि आप अपने घर में अधिक से अधिक कितना चांदी रख सकते हैं, ताकि इनकम टैक्स डिपार्टमेंट का कोई झंझट न हो। वहीं इससे होने वाली कमाई पर कितना टैक्स लगता है।

चांदी रखने पर लिमिट नहीं

सोने की तरह, चांदी (जैसे सिक्के, गहने, बर्तन आदि) रखने पर इनकम टैक्स एक्ट, 1961 के तहत कोई सीमा तय नहीं की गई है। अगर चांदी कानूनी तरीके से खरीदी गई या विरासत में मिली है, तो उस पर कोई रोक नहीं है। टैक्स तभी लगता है जब आप चांदी बेचते हैं और उस पर कैपिटल गेंस (लाभ) कमाते हैं। टैक्स सिर्फ बिक्री पर या छुपाई गई संपत्ति पाए जाने पर लगता है। हालांकि घर पर कितनी भी चांदी रखने की सीमा नहीं है, लेकिन अगर आपके पास ज्यादा चांदी है, तो उसकी खरीद के प्रमाण (बिल या रसीद) संभाल कर रखना बेहतर है। अगर आपने चांदी किसी ज्वेलर, डीलर या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से खरीदी है, तो उसका असली बिल जरूर रखें। भविष्य में अगर कभी इनकम टैक्स विभाग जांच करता है, तो ये दस्तावेज आपके लिए सुरक्षा कवच बन सकते हैं।

चांदी की कमाई पर टैक्स

चांदी पर टैक्स के नियम की बात करें तो यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने फिजिकल सिल्वर (जैसे गहने, सिक्के, बार) खरीदी है या सिल्वर ईटीएफ या सिल्वर म्यूचुअल फंड में निवेश किया है, और आपने इसे कितने समय तक रखा है. इसलिए, टैक्स के नियम समझना जरूरी है ताकि आप सही निवेश निर्णय ले सकें।

फिजिकल फार्म में चांदी पर टैक्स

अगर आपने चांदी के गहने या सिक्के को 24 महीने से पहले बेच दिया, तो उस पर हुआ लाभ शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेंस (एसटीसीजी) माना जाएगा और यह आपकी इनकम टैक्स स्लैब की दर के अनुसार टैक्स होगा, लेकिन आपने चांदी को 24 महीने से ज्यादा समय तक रखा, तो यह लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेंस (एलटीसीजी) माना जाएगा। अगर चांदी 23 जुलाई 2024 या उसके बाद खरीदी गई है, तो इस पर 12.5% टैक्स लगेगा और इंडेक्सेशन का लाभ नहीं मिलेगा। वहीं 23 जुलाई 2024 से पहले खरीदी चांदी पर 20% लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेंस टैक्स लगेगा इंडेक्सेशन के साथ।

सिल्वर म्यूचुअल फंड और ईटीएफ पर टैक्स

अगर आपने सिल्वर ईटीएफ या म्यूचुअल फंड को 12 महीने के अंदर बेचा, तो यह एसटीसीजी माना जाएगा और इनकम टैक्स स्लैब रेट के हिसाब से टैक्स लगेगा। अगर 12 महीने से बाद बेचा, तो यह एलटीसीजी माना जाएगा और 12.5% टैक्स लगेगा, बिना इंडेक्सेशन बेनेफिट के।

चांदी की ज्वेलरी, बिस्कुट और सिक्कों पर टैक्स

चांदी (बार, सिक्के या गहने) के मूल्य पर 3 फीसदी जीएसटी लगता है, जबकि गहनों के मेकिंग चार्ज पर 5 फीसदी जीएसटी लगाया जाता है।

यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे

यूपीआई के 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये भी कर सकेंगे पेमेंट

जानकारी | बिजनेस डेस्क

अब तक आपने म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल सिर्फ निवेश और रिटर्न कमाने के लिए किया होगा, लेकिन अब इसका इस्तेमाल पेमेंट करने में भी किया जा सकेगा। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) के नए फीचर 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये अब निवेशक यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे। यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि निवेशकों को बेहतर रिटर्न के साथ फ्लेक्सिबल कैश मैनेजमेंट का मौका भी देता है। यूपीआई के ‘पे विद म्यूचुअल फंड’ इस फीचर के जरिए आप अपनी लिक्विड म्यूचुअल फंड होल्डिंग से सीधे यूपीआई पेमेंट कर पाएंगे। मिसाल के तौर पर अगर आपने किसी फंड हाउस के लिक्विड फंड में निवेश किया है, और वह फंड इस सुविधा को सपोर्ट करता है, तो आप अपने उस निवेश का इस्तेमाल यूपीआई के जरिये किसी पेमेंट के लिए कर पाएंगे। जैसे ही आप यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी और पैसे फौरन ट्रांसफर हो जाएंगे। इसे इस तरह समझिए कि यह फीचर लिक्विड म्यूचुअल फंड को एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करने की क्षमता देता है, लेकिन फर्क यह है कि यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है। इस सुविधा को फिलहाल आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड

क्यों खास है यह फीचर

लिक्विड फंड शॉर्ट-टर्म मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करते हैं, जिनकी लिक्विडिटी बहुत ज्यादा होती है। ऐसे में जब जरूरत पड़े, तो निवेशक फौरन पैसे निकाल सकते हैं। अब 'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर से यह प्रॉसेस और आसान हो गई है, क्योंकि अब आपको पहले पैसा बैंक अकाउंट में ट्रांसफर करने की जरूरत नहीं। इसके अलावा यह फीचर आपके निवेश पर फुल लिक्विडिटी के बावजूद सेविंग अकाउंट से ज्यादा संभावित रिटर्न का फायदा भी देता है। सेविंग अकाउंट में जहां आम तौर पर 4% से कम सालाना ब्याज मिल रहा है, वहीं लिक्विड फंड इस समय करीब 6-7% तक का रिटर्न दे रहे हैं। यानी आपका पैसा बेकार पड़े रहने की बजाय बेहतर रिटर्न भी दे सकता है और जरूरत पर फौरन काम भी आ सकता है।

ऐसे आसान होगा पेमेंट

यूपीआई आज हर रोजमर्रा के लेनदेन का हिस्सा बन चुका है। किराने की दुकान से लेकर ऑनलाइन शॉपिंग तक, हम सभी इसका इस्तेमाल करते हैं। अब अगर यह पेमेंट सीधे म्यूचुअल फंड से हो जाए, तो आपको अलग-अलग ऐप्स में ट्रांसफर या रिडेम्प्शन की झंझट नहीं झेलनी पड़ेगी। व्यक्तिगत निवेशकों के साथ-साथ छोटे बिजनेस के लिए भी यह फीचर बहुत मददगार साबित हो सकता है। वे अपने शॉर्ट-टर्म कैश को लिक्विड फंड में रखकर रिटर्न कमा सकते हैं और जरूरत पड़ने पर उसी से पेमेंट कर सकते हैं। यह कैश मैनेजमेंट का स्मार्ट और फ्लेक्सिबल तरीका है।

- यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि बेहतर रिटर्न के साथ फ्लेक्सिबल कैश मैनेजमेंट का मौका देगा
- जैसे ही यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी
- पैसे फौरन ट्रांसफर हो जाएंगे, लिक्विड म्यूचुअल फंड एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करेगा
- यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है,
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड और बजाज फिनसर्व एएमसी जैसे फंड हाउसेज ने लॉन्च किया

क्या यह सेविंग से बेहतर है?

कई मामलों में हां, लेकिन कुछ सावधानियां भी जरूरी हैं। सेविंग अकाउंट ज्यादा सुरक्षित होते हैं और उनमें 5 लाख रुपये तक के डिपॉजिट का इंश्योरेंस भी होता है। वहीं, लिक्विड फंड में थोड़ा मार्केट रिस्क रहता है. हालांकि यह रिस्क बहुत कम होता है, फिर भी अगर आपका लक्ष्य केवल सुरक्षा है, तो सेविंग अकाउंट ही बेहतर है।लेकिन अगर आप थोड़ा जोखिम लेने को तैयार हैं और चाहते हैं कि आपका पैसा फुल लिक्विडिटी के बावजूद बेहतर रिटर्न कमाए, तो नई सुविधा आपके लिए सही विकल्प हो सकती है। हां, यह ध्यान रखना जरूरी है कि आप जिस फंड में निवेश करें, उसकी लिक्विडिटी और रिडेम्प्शन प्रोसेस भरोसेमंद हो।

यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन

'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर निवेशकों के लिए सुविधा और रिटर्न दोनों को जोड़ता है। यह दिखाता है कि भारत में डिजिटल पेमेंट और म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री कितनी तेजी से एक-दूसरे के करीब आ रही है। जो निवेशक अपने पैसों को हर वक्त रिटर्न के लिहाज से इनवेस्ट रखना चाहते हैं, उनके लिए यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन बन सकता है। बशर्ते वे इसके फायदों और रिस्क को समझकर इसका इस्तेमाल करें।

अच्छी तरह समझने के बाद करें इस्तेमाल

भले ही यह फीचर बेहद सुविधाजनक है, लेकिन निवेशकों को इसका इस्तेमाल करने से पहले कुछ बातें जरूर समझ लेनी चाहिए। लिक्विड फंड के रिटर्न अलग-अलग फंड हाउस में अलग-अलग हो सकते हैं, इसलिए औसत रिटर्न और एक्सपेंस रेशियो पर नजर रखना चाहिए. साथ ही यह जानना भी जरूरी है कि “इंस्टैंट रिडेम्प्शन” के साथ भी कुछ लिमिट्स या कट-ऑफ टाइम जुड़े हो सकते हैं। इसके अलावा, लिक्विड फंड से होने वाली कमाई पर टैक्स उसी तरह लगता है जैसे बैंक ब्याज पर. इसलिए इसे पूरी तरह इमरजेंसी फंड का विकल्प न मानें। अपने पैसे का कुछ हिस्सा हमेशा सेविंग अकाउंट में भी रखें ताकि किसी देरी की स्थिति में परेशानी न हो।

खबर संक्षेप

खेल महोत्सव में विजेता रहे खिलाड़ियों को किया पुरस्कृत

नांगल चौधरी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देशानुसार आयोजित सांसद खेल महोत्सव में कस्तुरबा गांधी बालिका स्कूल का प्रदर्शन सहरानीय रहा है। विजेता प्रतिभागियों को सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह ने स्मृति चिहन और प्रशंसा पत्र भेजकर सम्मानित किया है। साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों को खेल प्रतिभा निखारने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने कहा कि खेल और शारीरिक स्वास्थ्य का गहरा संबंध है। खेलों में अव्वल रहने वाले युवा पढ़ाई और सामाजिक कार्यों में भी टॉपर रहते हैं। इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर सांसदों ने विधानसभा स्तर पर खेल प्रतियोगिताएं कराई थी।

राव नरेंद्र की छवि खराब कर रही भाजपा सरकार

नारनौल। हरियाणा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह के खिलाफ राजनीतिक षड्यंत्र के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है तथा उनकी छवि को खराब करने के लिए भाजपा सरकार द्वारा यह साजिश रची गई है। उक्त आरोप लगाते हुए वरिष्ठ कांग्रेसी नेता राव होशियार सिंह ने शनिवार को प्रेस के नाम जारी बयान में बताया कि जो केस पिछले 12 वर्षों से निष्क्रिय पड़ा था, उसे अब अचानक सक्रिय किया जाना भाजपा की बौखलाहट और प्रतिशोध की राजनीति को दर्शाता है। उन्होंने बताया कि सरकार के दबाव में बिना किसी नोटिस के यह कार्रवाई भाजपा की घबराहट को दर्शाता है। उन्होंने बताया कि हाल ही कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किए गए राव नरेंद्र सिंह को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से यह कार्रवाई की जा रही है, क्योंकि राव नरेंद्र ने जिस सशक्त और अनुशासित कार्यशैली का परिचय दिया है, उससे भाजपा सरकार स्पष्ट रूप से विचलित हुई है। भाजपा शासन में जनता सुरक्षित नहीं है। आज भाजपा शासन में हरियाणा की जनता त्राहिमाम है।

पशुओं को रोग से बचाने के लिए टीकाकरण अभियान

मंडी अटेली। गांव राजपुरा में पशुओं को गलगोटू और मुंह-खुर रोग से बचाने के लिए टीकाकरण अभियान चलाया गया। यह अभियान उपनिदेशक पशुपालन एवं डेयरी विभाग डॉ. नसीब सिंह और उपमंडल अधिकारी डॉ. रोहताश यादव के दिशा-निर्देशानुसार संचालित किया जा रहा है। इस अवसर पर पूर्व सरपंच पप्पू ने अपनी पूरी डेयरी में टीकाकरण करवाया। उन्होंने बताया कि वह हर साल अपने पशुओं का नियमित टीकाकरण करवाते हैं, ताकि पशु स्वस्थ रहें और किसी प्रकार की बीमारी का खतरा न रहे। उन्होंने कहा कि इस टीकाकरण से न तो दूध उत्पादन पर कोई प्रभाव पड़ता है और न ही गर्भधारण पर। इस मौके पर डॉ. राजीव रोहिल्ला (पशु चिकित्सक), इंद्राज सिंह, अजय कुमार, भूपेंद्र कुमार,अंकित, हेमंत व अंकुर आदि उपस्थित थे।

सीईटी करेक्शन पोर्टल की अंतिम तिथि बढ़ी, दक्षिणी हरियाणा के युवाओं को नहीं मिल पाया फायदा

युवाओं का आरोप, इस क्षेत्र के नेता आपसी राजनीति में उलझे युवाओं की आवाज नहीं पहुंचा पा रहे मुख्यमंत्री तक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग ने सीईटी 2025 परीक्षा के लिए आवेदन में सुधार का एक और मौका युवाओं को दिया है। आयोग द्वारा खोला गया करेक्शन पोर्टल पहले 17 से 24 अक्टूबर तक खुला था जिसे अब बढ़ाकर 28 अक्टूबर तक कर दिया गया है। इस पोर्टल के जरिए उम्मीदवार अपनी व्यक्तिगत जानकारी और श्रेणी में सुधार कर सकते थे लेकिन इस सुविधा का लाभ दक्षिणी हरियाणा के युवाओं को लगभग नहीं मिल पाया। कई युवाओं ने नाराजगी जताते हुए

दिक्कत | सरल पोर्टल की खामी से कास्ट सर्टिफिकेट नहीं बन पाए, अब भुगतना पड़ रहा खामियाजा
सीईटी करेक्शन पोर्टल खुलने से भी नहीं मिल रही राहत, 14 जून तक के दस्तावेज ही मान्य
हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग की शर्त से युवाओं की बढ़ी परेशानी
जाति सर्टिफिकेट से वंचित अभ्यर्थियों ने 'मजबूरन' सामान्य श्रेणी में किया आवेदन
केवल 14 जून तक बने दस्तावेज ही स्वीकार्य

नारनौल। 20 अक्टूबर को प्रकाशित समाचार। फोटो : हरिभूमि

बताया कि करेक्शन पोर्टल खोलने के बावजूद उन्हें कैटेगरी बदलने में कोई मदद नहीं मिली। प्रदीप कुमार, अंकित कुमार, अमित, योगेश कुमार और सुदेश कुमार ने बताया कि फॉर्म भरते समय सरल पोर्टल बार-बार हैंग हो रहा था जिसके कारण कई युवाओं के जाति प्रमाण पत्र समय पर जारी नहीं हो पाए। परिणामस्वरूप उन्हें फॉर्म जनरल कैटेगरी में भरना पड़ा। जबकि वे आरक्षित श्रेणी में आते है। अब जब करेक्शन का मौका मिला तो उसमें भी नियम इतना सख्त रखा गया कि बहुत से युवा पात्र नहीं हो सके।

यह नियम आया आड़े

आयोग ने निर्देश दिया है कि केवल वही उम्मीदवार कैटेगरी सुधार सकते है जिनका जाति प्रमाण पत्र 14 जून 2025 से पहले का बना हुआ हो। इस शर्त के चलते हजारों उम्मीदवार बाहर हो गए। युवाओं ने कहा कि सरकार ने करेक्शन पोर्टल तो खोला लेकिन शर्तें इस तरह रखी कि वास्तव में किसी को फायदा नहीं हुआ।

सीएससी संचालक भी हो रहे परेशान

सीएससी संचालक सुदेश कुमार मंढाणा, हरिओम यादव कोजिंदा, राकेश कुमार मंढाणा, प्रदीप कुमार मुलोदी, ऋषिदेव भोजावास, अजित कुमार आकोली, नीरज भुंगारका, प्रवीण कुमार भोजावास, अंशु यादव ढाणी बाठोठा, हितेश कुमार सेका और नितेश कादिपुरी ने बताया कि रोजाना अनेक युवा सीएससी केंद्रों पर कैटेगरी सुधार से जुड़ी जानकारी लेने आते है लेकिन सिस्टम में बदलाव की कोई सुविधा नहीं है। युवाओं का कहना है कि सरकार को कम से कम प्रमाण पत्र की तारीख की शर्त में ढील देनी चाहिए थी।

दक्षिणी हरियाणा के युवाओं में रोष बढ़ा

हरिभूमि टीम ने जब इस मुद्दे पर दक्षिणी हरियाणा के अलग-अलग गांवों के युवाओं से बातचीत की तो पता चला कि सबसे ज्यादा शिकायतें इसी क्षेत्र से आ रही है। कई युवाओं का कहना है कि सरकार और स्थानीय नेतृत्व ने इस क्षेत्र के अभ्यर्थियों की समस्याओं को गंभीरता से नहीं लिया। उनका आरोप है कि यदि इस क्षेत्र के नेताओं ने समय रहते आवाज उठाई होती तो आयोग को नियमों में कुछ राहत देनी पड़ती। युवाओं का मानना है कि दक्षिणी हरियाणा के राजनीतिक प्रतिनिधियों का प्रभाव मुख्यमंत्री तक कमजोर पड़ गया है।

अब युवाओं की नजर 28 अक्टूबर पर

हालांकि आयोग ने करेक्शन पोर्टल की अंतिम तिथि 28 अक्टूबर तक बढ़ा दी है लेकिन युवाओं को अब भी उम्मीद कम ही है। उनका कहना है कि जब तक सरकार प्रमाण पत्र की तारीख से जुड़ी शर्त में ढील नहीं देती तब तक यह विस्तार केवल औपचारिकता रहेगा। दक्षिणी हरियाणा के युवाओं का यह भी कहना है कि यदि उनकी समस्या का समाधान नहीं हुआ तो आने वाले समय में वे संगठित होकर आंदोलन का रास्ता अपना सकते है।

सस्पेंड किए गए सचिव मार्केटिंग बोर्ड पंचकूला में देंगे हाजिरी

पैसे लेकर गेट पास व 'जे' फार्म जारी करने के आरोप में मार्केट कमेटी सचिव सस्पेंड

- ई-खरीद पोर्टल और मार्केट कमेटी के एच-रजिस्टर की ऑक्शन में भी मिला अंतर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

बाजरे की खरीद में कथित तौर पर बरती जा रही अनियमितताओं को लेकर प्रदेश के सीएम नायब सिंह सैनी के निर्देश पर मार्केटिंग बोर्ड के मुख्य प्रशासक मुकेश आहूजा ने कनीना मंडी के ईओ कम सचिव मनोज पाराशर को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया है। उनके स्थान पर नारनौल कार्यालय में कार्यरत असिस्टेंट सेक्रेटरी अजीत सिंह को नियुक्त किया गया है। जिन्होंने शुक्रवार रात्रि करीब 10 बजे ज्वाइन भी कर लिया है। जारी किए गए सस्पेंशन ऑर्डर के मुताबिक इस दौरान सचिव मनोज पराशर बोर्ड मुख्यालय पंचकूला में हाजिरी देगें। बता दें कि नई अनाज मंडी चेलावास में बिना बाजरा लाए एक सौ रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से वसूली कर गेटपास सहित जे फार्म जारी किए जाने के आरोपों को लेकर मार्केटिंग बोर्ड की तीन सदस्यीय टीम ने मंडी पहुंचकर जांच करनी चाही, जिसकी सूचना

कनीना। अनाज मंडी के बाहर बाजरे से लदे वाहन। फोटो : हरिभूमि

मिलते ही मार्केट कमेटी कर्मचारी तथा खरीद कर रहे व्यापारी अपने रिकार्ड का थैला लेकर मौके से खिसक गए। इस कार्य में सचिव के अलावा एमएस व ओआर भी शामिल बताए जा रहे हैं। ई-खरीद पोर्टल और मार्केट कमेटी के एच-रजिस्टर की ऑक्शन में अंतर पाए जाने तथा गेट पास जारी करने की प्रक्रिया में अनियमितताएं सामने आने के बाद यह कार्रवाई की गई है। टीम ने ऑनलाइन डाटा के हिसाब से रिकार्ड वेरीफाई करना चाहा। लेकिन मौके पर बाजरे की पीवी भी पूरी नहीं हो सकी। ई-खरीद पोर्टल व एच रजिस्टर में डाटा मैच नहीं करने पर टीम ने उच्च अधिकारियों को रिपोर्ट भेजी। इस रिपोर्ट पर संज्ञान लेते हुए मुख्यमंत्री ने सस्पेंड करने के आदेश जारी किए। मार्केट कमेटी के सचिव के निलंबित होने की सूचना मिलने के बाद कार्यालय कर्मचारियों में भय उत्पन्न हो गया। मार्केट कमेटी द्वारा दो धर्मकाटा में एक की चालू हालत में मिला। मंडी के बाद बाजरे से लदे वाहनों की कतार लगी हुई थी।

प्राइवेट एजेंट कम रेट पर कर रहे बाजरे की खरीद

मंडी में नियुक्त किए गए सचिव अजीत सिंह ने बताया कि शुक्रवार तक कनीना अनाज मंडी में 95 लाख क्विंटल बाजरे की खरीद की जा चुकी है। सरकारी खरीद न होने की वजह से मंडी में करीब 15 एक्टिव प्राइवेट खरीद एजेंट 1850 से 1950 रुपये प्रति क्विंटल की दर से बाजरे की खरीद कर रहे हैं। प्रारंभिक रूप से नियुक्त की गई एजेंसी हैफेड के अधिकारी बदरंग होने की वजह से बाजरे की सरकारी खरीद नहीं कर रहे हैं। उनकी ओर से रेवाडी लैब में बाजरे के सैंपल भेजे जा रहे हैं। जो गुणवत्ता मानकों पर खरे नहीं उतर पा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मंडी में बिजली-पानी की समुचित व्यवस्था की गई है।

सचिव सस्पेंड होना कोई नई बात नहीं

कनीना मंडी में कार्यरत मार्केट कमेटी सचिव का सस्पेंड होना कोई नई बात नहीं है इससे करीब चार साल पूर्व रबि फसल खरीद के समय पीवी न करवाने तथा खरीद कार्य में अनियमितताएं बरतने के आरोप में 7 व्यापारिक फर्म के खिलाफ पुलिस केस दर्ज कराया गया था वहीं तत्कालीन सचिव को सस्पेंड किया गया था।

सरकारी खरीद न होने पर भावांतर के चक्कर में उलझे कर्मी

अधिक बारिश होने के चलते बदरंग होने तथा खरीद मानकों पर सही नहीं उतरने पर हरियाणा सरकार बाजरे की सरकारी खरीद नहीं कर रही है। जबकि 575 रूपये प्रति क्विंटल के हिसाब से भावांअतर निर्धारित कर चुकी है। मंडी में गलत तरीके से गेटपास जारी करने तथा बाजरे खरीद की खरीद में फर्जीवाड़ा के चलते मार्केटिंग बोर्ड के अधिकारियों ने अपने स्तर पर जांच की जिसमें अंतर पाया गया। हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड के मुख्य प्रशासक मुकेश कुमार आहूजा की ओर से कनीना मंडी के सचिव-सह-ईओ मनोज पराशर और कोसली अनाज मंडी के सचिव सह-ईओ नरेंद्र कुमार को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया। मुख्य प्रशासक द्वारा की गई इस कार्रवाई के चलते अन्य अनाज मंडियों के अधिकारी सतर्क हो गए हैं।

मंडी अटेली। ग्रुप डी के कर्मी हिस्सा लेते हुए। फोटो : हरिभूमि

रोस्टर प्रणाली का अनुसरण करते हुए लिस्ट जारी की जाए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

हरियाणा ग्रुप डी संघर्ष विकास समिति (1209) ग्रुप डी प्रमोशन तथा अपने अधिकारों की आवाज उठाने के लिए कुरुक्षेत्र के पीपली स्थित ताऊ देवीलाल पार्क में शनिवार को सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में विकास समिति के प्रदेश अध्यक्ष सत्यवान सहरावत, प्रदेश महासचिव अमन भारतीय, प्रदेश कोषाध्यक्ष दीपक तंवर के नेतृत्व में अपनी मांगों को जोरदार तरीके से रखा। संघर्ष समिति के कर्मियों ने मुख्यमंत्री के निवास तक पैदल मार्च किया। महेंद्रगढ़ जिले से विभिन्न विभागों के ग्रुप डी के कर्मियों ने हिस्सा लिया। संघर्ष समिति के महेंद्रगढ़ जिले के प्रधान नरसिंह सैनी ने बताया कि उनकी प्रमुख मांगों में रोस्टर प्रणाली का अनुसरण करते हुए सीनियरिटी लिस्ट जारी की जाए और कुल स्वीकृत पदों का 50 प्रतिशत कोटा के साथ तकनीकी और गैर-तकनीकी पदों पर प्रमोशन की जाए।

ग्रुप डी कर्मियों को अवकाश का लाभ मिले

समिति के प्रदेश महासचिव अमन भारतीय ने बताया कि ऑन ड्यूटी महिला कर्मचारी के साथ किसी भी तरह के शोषण या उत्पीड़न की शिकायतों के निवारण हेतु विभागीय जांच कमेटियों में ग्रुप डी महिला कर्मचारी सदस्य का होना अनिवार्य किया जाए और सभी महिला कर्मचारियों को पोओएसच एक्ट 2013 के बारे में अवेयरनेस कैंपेन चला के अवगत कराया जाए। ग्रुप डी कर्मचारियों को फेस्टिवल एडवांस ओर व्हिट लोन के तौर पर दिया जाता है, इस राशि को लोन के बजाए बोनस के तौर पर दिया जाए। सभी ग्रुप डी कर्मचारियों को राजपत्रित अवकाशों का लाभ दिया जाए। प्रायः यह देखने में आता है कि राजपत्रित अवकाशों के दिन कर्मचारी से काम लिया जाता है।अनाधिकारिक तौर पर, और छुट्टी के दिन (रविवार सहित) ड्यूटी लगा दी जाती है, इसे बारे तुरंत संज्ञान लेकर जरूरी निर्देश जारी किए जाए। कर्मचारियों के आश्रितों के मेडिकल बिल्स क्लेम में आश्रितों की आय सीमा की शर्त हटाई जाए। ग्रुप डी कर्मचारियों के लिए विभागीय बदलाव हेतु दो वर्ष के अंतराल के बाद पोर्टल खोला जाए।

शहीद देश का होते हैं गौरव: एडवोकेट अतरलाल

शहीद परिवारों को पांच-पांच लाख ग्रांट देने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

विश्व के सबसे बड़े सैनिक सम्मान विक्टोरिया क्रास से सम्मानित शहीद सुबेदार रामस्वरूप सिंह की पुण्यतिथि पर उनके पैतृक गांव खेड़ी तलवाना में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। इस दौरान समाजसेवी एडवोकेट अतरलाल ने क्षेत्र के गणमान्यों के साथ शहीद की मूर्ति पर माल्यापर्ण कर नमन किया। शहीद के सम्मान में सभी ने खड़े होकर एक मिनट का मौन धारण कर भावभीनी श्रद्धांजलि भेंट की। एडवोकेट अतरलाल ने कहा कि शहीद सूबेदार रामस्वरूप सिंह ने 1944 द्वितीय विश्व युद्ध में जापानी सैनिकों को परास्त कर विग हिल चौकी पर कब्जा कर बेजोड़ शहादत का कारनामा कर विक्टोरिया क्रास

नारनौल। शहीद रामस्वरूप सिंह की मूर्ति पर माल्यार्पण करते मुख्यातिथि।

जीतकर संयुक्त पंजाब व देश का नाम रोशन किया। उन्होंने कहा कि शहीद देश के गौरव होते हैं। शहीदों का सम्मान राष्ट्र धर्म है। उन्होंने केन्द्र व हरियाणा सरकार से जिला के सभी शहीदों के स्मारकों के रख रखाव के लिए शहीद परिवारों को पांच-पांच लाख रूपये ग्रांट देने की मांग की।

यह रहे मौजूद

इस मौके पर कप्तान मामराज साहब, कप्तान ओमपाल, सरपंच पंकज, शहीद के पौत्र रिपूद्मन व शिवकुमार, पूर्व सरपंच सुरेन्द्र सिंह, पूर्व सरपंच रिसाल पहलवान, सुरेन्द्र सिंह, चेयरमैन धूम सिंह, ठाकुर बलजीत सिंह, शिब्बू जेलदार, कैप्टन रमेश सिंह, सुरेश, सुबेदार मोतीलाल शर्मा, प्रकाश चौहान, नरेश सैन, पूर्व सरपंच रामनिवास, कैलाश, राजेन्द्र सिंह नम्बरदार, रणबीर नम्बरदार, राकेश यादव, ओमल तंवर, करतार तंवर, मास्टर रणवीर, कैप्टन रामौतार, कैप्टन चिमनसिंह, महेन्द्र जांगड़ा, मोहित, डॉ. सौरव, सक्षम, अंसज आदि उपस्थित थे।

स्कॉर्पियो व वैग्नार कार की टक्कर में परिवार के तीन सदस्य घायल

नेशनल हाईवे नंबर 11 पर गुवानी के निकट हादसा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

बीती शाम को हुए सड़क हादसे में एक ही परिवार के तीन सदस्य घायल हो गए। घायलों को नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दूसरी ओर शिकायत के आधार पर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में गांव मित्रपुरा निवासी संजय कुमार ने बताया कि वह अपनी पत्नी शारदा, बेटे नितिन उर्फ निकेत तथा बेटी रिया के साथ अपनी स्कॉर्पियो कार से गांव से गुरुग्राम जा रहा था। जब शाम करीब सवा छह बजे वह नेशनल हाइवे नंबर 11 पर गांव गुवानी से बाछौद की ओर जा रहे थे, तभी सामने से एक तेज रफ्तार

नारनौल। क्षतिग्रस्त स्कॉर्पियो।

वैग्नार कार आई। उसने अपनी गाड़ी को संभालने की कोशिश की, लेकिन वैग्नार ड्राइवर ने उसको जोरदार टक्कर मार दी, जिससे स्कार्पियो क्षतिग्रस्त हो गई।

संजय कुमार ने आरोप लगाया कि वैग्नार में चार युवक सवार थे, जिनकी उम्र लगभग 25 से 30 वर्ष के बीच थी और सभी ने शराब पी रखी थी। हादसे के बाद तीन युवक मौके से फरार हो गए, जबकि कार ड्राइवर अत्यधिक नशे में होने के कारण तुरंत नहीं उतर पाया। टक्कर के दौरान संजय कुमार, उनकी पत्नी शारदा देवी और पुत्र नितिन को चोटें आईं। बाद में मौका देखकर ड्राइवर भी भाग निकला। इस पर घटना की सूचना पुलिस को दी गई। पीड़ित संजय ने थाना सदर नारनौल में लिखित शिकायत दी और वैग्नार कार चालक और उसके साथियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने जांच शुरू करते हुए दोनों वाहनों को जब्त कर लिया है।

श्रीमद्भागवत साक्षात नारायण का है स्वरूप: पंडित बजरंग शास्त्री

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

गांव भूषण कलां मे आयोजित संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा के तीसरे दिन भागवत आचार्य पंडित बजरंग शास्त्री ने भागवत कथा में बताया कि श्रीमद्भागवत साक्षात नारायण का स्वरूप है और मुक्ति प्रदाता है। घर परिवार का पालन पोषण करना हमारा धर्म है, लेकिन हमारी हर एक श्वास में प्रभु का नाम स्मरण होता रहे, यही मानव जीवन का परम धर्म है।

हम सभी को विश्वास के साथ निस्वार्थ भक्ति करनी चाहिए। शुकदेव ने बताया कि भगवान नारायण द्वारा बह्मा को चतुः श्लोकि भागवत उपदेश किया। उन्होंने बताया कि भगवान नारायण की आज्ञा से ब्रह्माजी ने सृष्टि का

नारनौल। भागवत कथा सुनते ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

निर्माण आरम्भ किया और सर्वप्रथम दस प्रकार की सृष्टि निर्माण का वर्णन किया। इसके उपरांत ब्रह्माजी ने अपने शरीर से सृष्टि के पहले पुरुष मनु और स्त्री शतरूपा को महारानी को प्रकट किया और इन्ही के द्वारा आगे पूरी सृष्टि कि रचना हुई। हम सभी लोग मनु कि संतान है, इसलिये हम सभी मानव कहलाते है। मनुजी के तीन पुत्री आकुति, देवहूति, प्रसूति व दो पुत्र प्रियव्रत और उत्तानपाद का जन्म हुआ और इन्ही से सृष्टि का विस्तार हुआ। आचार्य ने भागवत कथा मे कर्दम देवहूति संवाद, कपिल व देवहूति संवाद सुनाया। आचार्यजी ने कथा मे कहा कि मनुष्य को अपने घर और समाज के कार्य करते हुए प्रभु का नाम स्मरण एवम पुण्य के कार्य भी अवश्य करते रहने चाहिए। वो व्यक्ति धन्य होता है जो प्रभु का नाम स्मरण करता है और करवाता है।

परेशानी | रात में दिखाई नहीं देता, पैदल चलने वाले यात्री कभी भी गिर सकते हैं गड्ढे में

खासपुर से दुबलाना सड़क के साथ गंदे पानी के नाले पर ढक्कन नहीं, हादसों का खतरा

ग्रामीणों ने जल्द से जल्द नाले में ढक्कन लगवाने की मांग की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

क्षेत्र के गांव खासपुर से दुबलाना जाने वाला रास्ता अब हादसों का प्वाइंट बन चुका है। इस टाइलों की सड़क के साथ बने नाले के गंदे पानी के नाले को ढकने के लिए भी कोई व्यवस्था नहीं की गई है। नाला खुला होने के कारण किसी भी दिन कोई बड़ा हादसा हो सकता है। यह नाला बिल्कुल सड़क के साथ बना हुआ है, जिसमें पैदल चलने वाले यात्री कभी भी गिर जाते हैं। वहीं साइकिल एवं मोटरसाइकिल सवार भी इसमें गिरकर चोटिल हो सकते हैं, लेकिन खासपुर पंचायत ने इस ओर रुख नहीं किया है। ग्रामीणों ने बताया कि

मंडी अटेली। खुला पड़ा गंदा नाला। फोटो : हरिभूमि

गांव का गंदा पानी इस सड़क मार्ग के बिल्कुल साथ लगते नाले से गांव से बाहर जाता है। इस टाइलों के सड़क के किनारे पर नाले ढक्कन नहीं होने के चलते दुर्घटनाओं का कारण बन सकता है। जिससे वाहन चालकों और राहगीरों को हो खतरा होता है। खासकर रात में जब यह दिखाई नहीं देता है। ऐसे खुले नाले दुर्घटनाओं को न्योता देते हैं। जिससे पैदल चलने वाले और बाइक सवार भी घायल हो सकते हैं। इस खुले नाले के बारे में ग्राम पंचायत को पता होते हुए भी वह उदासीन बनी हुई है। ग्रामीणों की मांग है कि जल्द से जल्द नाले में ढक्कन लगवाए जाएं ताकि लोगों को इस परेशानी से निजात मिल सके।

अभी सड़क कंप्लीट नहीं हुई

सरपंच प्रतिनिधि ने इस बारे में बेरुखा जवाब दिया। इस बारे में सरपंच प्रतिनिधि दारा सिंह से बात की गई तो उन्होंने बताया कि एक इस सड़क मार्ग पर पहले बीच-बीच में चार होदी बनी हुई थी। तीन को हमने पहले से ही ढका हुआ है। बची हुई एक को जाल लगवाना है। मिस्त्री को उसके बारे में बोला हुआ है। वहीं इस मामले में सरपंच प्रतिनिधि दारा सिंह से बात करते हुए किसी एक पंच प्रतिनिधि ने फोन पर ही गांव की समस्या के बारे में बोलते हुए बताया कि सरपंच साहब ने आपको बोला हुआ है, वह सड़क कंप्लीट नहीं हुई है, वह सड़क निर्माणधीन है। गांव की समस्याएं तो लिख रहे हो, यहां आकर सुविधा क्यों नहीं लिखते। वह खुद निर्विरोध चुना हुआ पंच प्रतिनिधि है। उसके बाद सरपंच प्रतिदिन दारा सिंह ने अपनी बात बदलते हुए बताया कि वह रास्ता ग्राम पंचायत नहीं बनवा रही है। न ही उसे नाले का कार्य ग्राम पंचायत का है।

कोलकाता इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के लिए चुनी गई हरियाणा पर आधारित फिल्म 'धुंध'

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

दक्षिण हरियाणा के ग्रामीण जीवन और पारिवारिक संवेदनाओं पर आधारित फिल्म 'धुंध' का चयन इस वर्ष के कोलकाता इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के लिए किया गया है। यह फिल्म फेस्टिवल में 12 और 13 नवंबर को प्रदर्शित की जाएगी। फिल्म का निर्देशन योगेश वत्स ने किया है, जबकि निर्माता ऋषि सिंहल है। फिल्म की कहानी भी दक्षिण हरियाणा के किसान परिवार पर आधारित है।

इस फिल्म की शूटिंग महेंद्रगढ़ जिले के ग्रामीण इलाकों में की गई है, जहां की मिट्टी, वातावरण और सादगी फिल्म के दृश्यात्मक प्रभाव को और गहराई देते हैं। फिल्म में कलाकार आकांक्षा भारद्वाज और प्रताप विश्वासि ने अपनी सशक्त अदाकारी से किरदारों को जीवंत बनाया है। फिल्म के निर्माता ऋषि सिंहल ने बताया कि उनका उद्देश्य ऐसी कहानियां दर्शकों तक पहुंचाना है, जो दक्षिण हरियाणा के गांवों की वास्तविकता, संस्कृति, संघर्ष और मानवीय भावनाओं को सिनेमा के जरिए सामने लाएं।

■ निर्माता ऋषि सिंहल ने बताया कि उनका उद्देश्य ऐसी कहानियां दर्शकों तक पहुंचाना है

निर्देशक ने बताया कि धुंध एक किसान परिवार की कहानी है, जो समाज की पारंपरिक सोच और पारिवारिक दबावों के बीच मानवीय संवेदनाओं को उजागर करती है। इस फिल्म के निर्माता ऋषि सिंहल इससे पहले भी सिनेमा तथा रंगमंच में नाम कमा चुके हैं। पीहर की चूंदड़ी व कुणबा जैसी फिल्मों के निर्माण के अलावा सीरियल रावी तथा श्रीजी इंटरटेनमेंट के बैनर तले संगीत, साहित्य एवं रंगमंच के अनेक बड़े प्रोजेक्ट कर चुके हैं।

जवानों ने किया नेशनल पुलिस म्यूजियम का भ्रमण

रेवाड़ी। शनिवार को पुलिस अधीक्षक हेमेंद्र कुमार मीणा के निर्देशानुसार शहीद पुलिसकर्मियों के प्रति सम्मान और उनके अद्वितीय बलिदान को नमन करने के उद्देश्य से पुलिस के 50 जवानों ने नेशनल पुलिस म्यूजियम नई दिल्ली का भ्रमण किया। इस अवसर पर सभी पुलिस कर्मियों ने देशभर के वीर पुलिस शहीदों के जीवन, योगदान और शौर्य गाथाओं को नजदीक से जाना। नेशनल पुलिस म्यूजियम के भ्रमण के दौरान जवानों ने भारत की पुलिस सेवा के गौरवशाली इतिहास, विभिन्न राज्यों की पुलिस की उपलब्धियों को समझा।

देश के प्रमुख राजमार्ग पर बने 100 से ज्यादा अवैध कट सड़क पर बहा रहे रक्त

हाइवे पर बंद नहीं हुआ अवैध कटों का खेल, लटकी प्वाइंट बनाने की योजना

सीमेंट बैरियर से दोनों ओर से बंद करने थे अवैध कट, एक बार शुरू करने के बाद मामला डाला ठंडे बस्ते में

नरेन्द्र वत्स ▶▶| रेवाड़ी

दिल्ली-जयपुर नेशनल हाइवे पर बार-बार सड़क के दोनों ओर पानी निकासी के नालों को पाटकर अवैध कट बनाने वाले ढाबा और पेट्रोल पंप मालिकों का खेल बंद होने नाम नहीं ले रहा है। देश के प्रमुख राजमार्ग पर बने 100 से ज्यादा अवैध कट सड़क पर खून बहा रहे हैं। एनएचएआई एंट्री और एक्जिट प्वाइंट बनाकर शेष रोड को सीमेंट-कंकरीट से बने बैरियर से बंद करने की योजना भी अधर में लटकी हुई है। कुछ स्थानों पर ही एनएचएआई ने बैरियर लगवाए हैं। हालांकि हाल ही में इस कार्य को तेज से शुरू कराए जाने के दावे किए जा रहे हैं, परंतु इस कार्य में रुकावट की आशंका भी बनी हुई है। राजस्थान बॉर्डर से लेकर धारूहेड़ा तक होटल, ढाबा व पेट्रोल पंप मालिकों ने नेशनल हाइवे रोड के दोनों ओर बने नालों को पाटकर अवैध कट बनाए हुए हैं। इन अवैध कटों के सहारे उनका करोड़ों रुपये का कारोबार चल रहा है, परंतु यह कट हाइवे पर हादसों को बढ़ावा देने का काम कर रहे हैं। कई होटल व ढाबा मालिकों ने तो नालों पर लोहे के जाल डालकर कट बनाए हुए हैं। बिना एंट्री या एक्जिट प्वाइंट के इन कटों से वाहनों का आवागमन हादसों का कारण बन जाता है। इस हाइवे पर वाहनों की रफ्तार काफी तेज रहती है। अवैध कटों से वाहनों के मेन रोड पर प्रवेश करने का आभाष नहीं होता, जिस कारण अक्सर हादसे होते रहते हैं।

कंपनियों के आउटलेट भी बने परेशानी

सूत्रों के अनुसार इस हाइवे के दोनों ओर कई नामी कंपनियों के आउटलेट भी खुले हुए हैं, जिनके सामने अवैध कट बने हुए हैं। अगर इन कटों का बंद किया जाए, तो उनका धंधा चौपट हो सकता है। इसी तरह प्रभावशाली ढाबा मालिकों और पेट्रोल पंप संचालकों ने भी कट बनाए हुए हैं। अगर इन कटों को बंद करा दिया जाए, तो उनका धंधा भी ठप होने की आशंका है। यही कारण है कि अवैध कटों को बंद करने की योजना अभी तक पूरी तरह से अमल में नहीं लाई गई है। जब भी कटों को बंद करने का प्रयास किया जाता है, तो ठेकेदार के श्रमिकों को डरा-धमकाकर कार्य बीच में रुकवा दिया जाता है।

ओवरलोडिंग को बढ़ावा दे रहे कट

कई पेट्रोल पंप मालिकों के बनाए हुए अवैध कट ओवरलोडिंग को बढ़ावा देने का कार्य भी कर रहे हैं। जब आरटीए की टीम किसी ओवरलोड डंपर का पीछा करती है, तो चालक इन्हीं कटों के रास्ते पेट्रोल पंप या ढाबे पर अपना वाहन ले जाकर खड़ा कर देते हैं। वहां उन्हें कोई कार्रवाई नहीं होने की गारंटी दी जाती है। ऐसे स्थानों पर पहले से ही बदमाश किस्म के लोग मौजूद रहते हैं, जो आरटीए टीम के साथ मारपीट करने तक पर उतारू हो जाते हैं। अवैध कट उनके लिए काफी कारगर साबित हो रहे हैं।

कटों से हादसों की लगातार आशंका

अधिकांश ढाबा संचालकों ने नेशनल हाइवे से ढाबों तक वाहन पहुंचने के लिए अवैध कट बनाए हुए हैं। यह कट हाइवे के बराबर से निकल रहे नालों को पाटकर बनाए हुए हैं। अवैध कटों के कारण नेशनल हाइवे पर हादसों की आशंका बढ़ जाती है। ट्रैफिक पुलिस ने गत वर्ष इस मामले को गंभीरता से लेते हुए अवैध कटों को बंद कराने का निर्णय लिया गया था। इसके लिए कटों की सूची भी पुलिस विभाग की ओर से तैयार की गई थी, लेकिन अभी तक यह मामला ठंडे बस्ते में पड़ा हुआ है।

लटका बैरियर का कार्य

एनएचएआई ने गुरूग्राम से खेड़की दौला टोल प्लाजा से खेड़ा बैरियर तक 32 एंट्री और एक्जिट प्वाइंट चिन्हित किए थे। इन प्वाइंट्स को छोड़कर सड़क को दोनों ओर से बैरियर लगाकर बंद करने की योजना बनाई थी। इस पर कार्य भी शुरू किया गया था। धारूहेड़ा से कुछ दूर तक जयपुर की दिशा में बैरियर लगाकर कट बंद कर दिए थे, लेकिन बाद में यह कार्य बंद हो गया।

सीधे एंट्री कराने के लिए बन रहे कट

अवैध कटों को बंद करने का कार्य तेज गति से शुरू करा दिया गया है। साबी नदी पुल तक सड़क के दोनों ओर दीवार बनाकर अवैध कट बंद किए जा चुके हैं। जल्द ही खेड़ा बैरियर तक के सभी अवैध कटों को बंद कर दिया जाएगा। **कुलदीप, पीडी, एनएचएआई।**

दीवार बनाकर बंद कर रहे कट

अवैध कटों के कारण हादसों की आशंका बनी रहती है। एनएचएआई को कई बार इस बारे में लिखा जा चुका है। अब एनएचएआई ने तेज गति से यह कार्य शुरू कर दिया है। दीवार बनाकर दोनों साइड के कट बंद किए जा रहे हैं, जिससे हादसों की आशंका कम हो जाएगी।
-पवन कुमार, डीएसपी ट्रैफिक।

खबर संक्षेप

महिला के गले से उड़ाया मंगलसूत्र, आरोपी काबू

रेवाड़ी। मॉडल टाउन में अपनी बेटी के साथ अस्पताल जा रही एक महिला का मंगलसूत्र बाइक सवार दो बदमाशों ने झटक लिया। सीआईए ने तुरंत कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। दूसरे आरोपी की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं। सेक्टर-4 रेवाड़ी निवासी एक महिला ने अपनी शिकायत में बताया कि गत 22 अक्टूबर को शाम के समय वह अपनी बेटी के साथ शास्त्री चौक माडल टाउन से कत्याल अस्पताल की तरफ जा रही थी। इसी दौरान एक बाइक पर दो युवक बाइक आए और उसके गले से एक मंगलसूत्र व एक धागे में सोने व चांदी के दो लोकेट को छीनकर भाग गए। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू की थी। इस मामले में सीआईए ने एक आरोपी राजस्थान के रसनाली निवासी विक्रम को गिरफ्तार कर लिया।

बाइक चोरी मामले में आरोपी चढ़ा पुलिस के हत्थे

रेवाड़ी। कसोला थाना पुलिस ने बाइक चोरी करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की गई बाइक भी बरामद कर ली है। साल्हावास निवासी दलीप सिंह ने पुलिस शिकायत में बताया था कि गत 22 अक्टूबर को वह कसौला चौक पर अस्पताल में अपनी पत्नी को दवाई दिलाने के लिए गया था। उसने अपनी बाइक को अस्पताल के बाहर खडी किया था। जिसे कोई नाम पता नामालूम व्यक्ति चोरी करके ले गया है। जिस पर पुलिस ने थाना कसौला में चोरी का मामला दर्ज करके जांच शुरू की थी। जो जांच के बाद पुलिस ने शुक्रवार को मामले में संलिप्त एक आरोपी जिला गुरुग्राम के गांव सिधरावली निवासी रोहित शर्मा उर्फ छोटू को गिरफ्तार कर लिया है।

चोरी की बाइक खरीदने का आरोपी भेजा जेल

रेवाड़ी। सीआईए धारूहेड़ा ने चोरी की बाइक खरीदने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की बाइक बरामद कर ली। उसे कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया गया। 14 अक्टूबर को राजस्थान के जिला अलवर के गांव अकलीमपुर निवासी अमित कुमार ने पुलिस शिकायत में बताया था कि वह धारुहेडा की संतोष कालोनी में किराए के मकान में रहता है। 27 जुलाई को उसने अपनी बाइक मकान के बाहर खड़ी की थी। बाइक को कोई व्यक्ति चोरी कर ले गया है। पुलिस ने चोरी का मामला दर्ज करके जांच शुरू की थी। इस मामले में सीआईए धारूहेड़ा ने शुक्रवार को मामले में संलिप्त एक आरोपी चांद कालोनी भूपविहार धारूहेड़ा निवासी राज को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की गई बाइक को बरामद कर लिया। पुलिस पूछताछ में आरोपी राज ने बताया की उसने यह बाइक तीन हजार रुपये में एक देव नाम के युवक से खरीदी थी।

बाजरा खरीद की शुरू की जांच

कोसली। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की ओर से कोसली मार्केट कमेटी के सचिव नरेन्द्र कुमार को निलंबित किए जाने के मामले में शनिवार शाम एसडीएम विजय कुमार यादव ने बाजरा खरीद की जांच-पड़ताल शुरू कर दी है। एसडीएम विजय कुमार यादव ने मंडी के दोनों मुख्य द्वारों के गेट पास, सीसीटीवी कैमरों की फुटेज और बाजरा स्टाक से संबंधित दस्तावेज अपने कब्जे में ले लिए हैं। यह सारा रिकार्ड पिछले एक महीने का है, जिसकी गहन छानबीन की जाएगी। एसडीएम विजय कुमार यादव ने आढ़तियों को निर्देश दिए कि मंडी परिसर में खुला पड़ा बाजरा रविवार को सुबह 11 बजे तक कट्टों में पैक करना सुनिश्चित करें, जिससे कि बाजरा स्टाक का सही ढंग से सत्यापन किया जा सकें। उन्होंने कहा कि सरकार के निर्देश अनुसार इस मामले की पारदर्शी तरीके से जांच कराई जाएगी।

स्वच्छता की मिसाल बना कर्मचारियों का श्रमदान

रेवाड़ी। स्वास्थ्य विभाग की टीम की ओर से स्वच्छता से स्वस्थता की ओर एक और कदम को साकार करते हुए शनिवार को जिला नागरिक अस्पताल में चौदहवां सफाई अभियान चलाया गया। अभियान का नेतृत्व बाल सफाई ब्रांड एंबेसडर मास्टर समर्थ एवं मिस अदाविका ने किया। अभियान की अध्यक्षता प्रधान चिकित्सा अधिकारी डा. सुरेंद्र यादव ने की। अभियान में डा. ज्योति यादव, संतोष यादव, आरएमओ डा. सुभाष यादव, सीनियर नर्सिंग ऑफिसर अनीता सैनी, राजबाला यादव, सुपरवाइजर मदन, अजय, महेश, तरुण, सिक्योरिटी गार्ड रतन व सुरेंद्र, माली पवन कुमार, मान सिंह, अरुण कुमार, सेनिटेशन स्टाफ नरेश, नवीन, अजय, प्रकाश, लक्ष्मण, राजेश, देशराज, मंगल, शांति, अजय, वार्ड अटेंडेंट दुर्गा, संजीव, दिनेश खींची, मोनू, इलेक्ट्रिशियन हेल्पर विनय, रविंद्र तथा गैस मैनिफोल्ड स्टाफ रोहताश सहित अनेक नागरिकों ने सहयोग दिया। अभियान के तहत ट्रॉमा सेंटर, आवासीय परिसर एवं पार्क क्षेत्र की सफाई की गई। सूखे पत्तों की सफाई, झाड़ियों की छंटाई एवं कचरा एकत्रित किया गया। अभियान का मुख्य उद्देश्य अस्पताल को एक स्वच्छ, सुरक्षित एवं रोगी-अनुकूल वातावरण प्रदान करना था ताकि मरीजों व उनके परिजनों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के साथ सकारात्मक अनुभव प्राप्त हो सकें। इस मौके पर पीएमओ डा. सुरेंद्र यादव ने कहा कि अस्पताल केवल उपचार का केंद्र नहीं, बल्कि एक स्वच्छ, हरित और मानव-केंद्रित स्वास्थ्य संस्थान का आदर्श उदाहरण होना चाहिए।

व्यक्ति की सारी बाधाओं का आधार अहंकार, जिससे से दूर होकर ही प्रभु का मार्ग खुलता: आचार्य प्रद्युम्न

रेवाड़ी। नाईवाली सब्जी मंडी स्थित आर्य समाज मंदिर में शनिवार को सत्संग-प्रवचन व हवन का आयोजन किया गया। आर्य समाज के वार्षिक उत्सव में पधारे आचार्य प्रद्युम्न ने लोगों से आध्यात्मिक पथ पर चलने का आह्वान किया। उन्होंनें मन के नियंत्रण व एकाग्रता के बारे में बताते हुए कहा व्यक्ति की सारी बाधाओं का आधार अहंकार है। अहंकार से दूर होकर ही प्रभु का मार्ग खुलता है। महाभारत में युधिष्ठिर यक्ष संवाद में बताया गया है कि मानं हित्वा प्रियो भवति अर्थात मन के अहंकार को त्याग कर ही मनुष्य भगवान व समाज का प्रिय होता है। उन्होंने कहा कि हमें भगवान से शुद्ध बुद्धि की प्रार्थना करनी चाहिए और साथ ही खाना पीना सब काम कामना भगवान के अर्पण करने चाहिए। उन्होंने कहा कि भोजन भी भगवान के लिए करो, भजन भी भगवान के लिए करो, कामना भी भगवान के लिए करो, दान भी भगवान के लिए करो, गो सेवा भी भगवान के लिए करो, जब हम भगवान के लिए करेंगे तो शुद्ध होंगे और हम व हमारा धंधा शुद्ध होगा और उससे निश्चित रूप से हमारी बुद्धि शुद्ध होगी। उन्होंने कहा कि जब हम भगवान का स्मरण करके भगवान को अर्पण करके सब काम करेंगे, तो उसमें पवित्रता रहेगी। उन्होंने अहंकार को त्यागने और भगवान के साथ अपने को मिला देने की प्रेरणा की।

दिनेश यादव बने बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कर्मचारी एसोसिएशन के प्रधान

रेवाड़ी। बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कर्मचारी एसोसिएशन का चुनाव शांतिपूर्ण सम्पन्न हुआ। चुनाव प्रक्रिया का संचालन पर्यवेक्षक कृष्ण कुमार संगठन सचिव हरियाणा, सुखविंदर सिंह तथा सचिव हरियाणा अशोक की अध्यक्षता में किया गया। चुनाव में सर्वसम्मति से एसोसिएशन के पदाधिकारियों को चयन किया गया। इस मौके पर डीएमओ ऑफि से दिनेश यादव को प्रधान, महासचिव जितेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रधान उर्मिला देवी, वरिष्ठ उपप्रधान सुशीला देवी, राहुल दहिया को कैशियर, चन्द्र प्रकाश को प्रेस सचिव तथा सनी का ऑडिटर नियुक्त किया गया। इस अवसर पर पूर्व जिला प्रधान बिरेंद्र सिंह यादव, पूर्व महासचिव जितेन्द्र कुमार, हंसराज व दलवीर सिंह सहित अनेक कर्मचारी मौजूद थे।

डीईओ की सेवानिवृत्ति पर किया गया सम्मानित

रेवाड़ी। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बूढ़पुर में जिला शिक्षा अधिकारी सुभाष चन्द्र की सेवानिवृत्ति अवसर पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। रेड कार्पेट वेलकम के साथ एनसीसी कैडेटस और स्कॉउट गाइड ने सलामी देकर उनका स्वागत किया। सुभाष चन्द्र इसी विद्यालय के पूर्व छात्र, लेक्चरर और प्रधानाचार्य रह चुके हैं। वक्ताओं ने कहा कि सुभाष चन्द्र अनुशासनप्रिय, कर्मनिष्ठ और संवेदनशील अधिकारी के रूप में सदैव याद किए जाएंगे। दिव्यांगता के बावजूद उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्ता, पारदर्शिता और नवाचार को नई दिशा दी। विद्यालय की प्रधानाचार्य पूनम कुमारी ने कहा कि सुभाष चन्द्र ने शिक्षा विभाग में अपनी निष्ठा और कार्यकुशलता से एक प्रेरक मिसाल कायम की है। विद्यालय परिवार ने उन्हें दीर्घायु, स्वस्थ और सुखमय जीवन की कामना की।

रेवाड़ी। सुभाष चन्द्र को स्मृति चिंह भेंट करते हुए शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 × 8 सें.मी 10 × 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

मौसम के कारण साफ होने लगा प्रदूषण एक्यूआई कम होकर आया 300 से नीचे

लोगों को मिलने लगी राहत की सांस, अब बारिश का कर रहे इंतजार

दिवाली के तुरंत बाद एक्यूआई 400 के आसपास पहुंच गया था,

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

दिवाली पर हुई आतिशबाजी के बाद जहरीली हुई हवा अब साफ होनी शुरू हो गई है। मौसम की मेहरबानी के कारण एक्यूआई 300 से नीचे आ गया है, जिसमें जल्द ही और सुधार की संभावना जताई जा रही है।

प्रतिबंद्ध के बावजूद दिवाली पर्व पर जमकर अतिशबाजी हुई थी, जिस कारण हवा में धुआं का जहर घुल गया था। दिवाली के तुरंत बाद एक्यूआई 400 के आसपास पहुंच गया था, जिससे ग्रेप-2 स्टेज की पाबंदियां लागू कर दी गई थीं। दिवाली के बाद लोगों को आंखों में जलन की शिकायत होने लगी थी। आसमान में धुआं की चादर छा गई थी, जिससे विजिबिलिटी भी प्रभावित हो रही थी। मौसम का मिजाज ठंडा होने और दिवाली पर वाहनों का आवागमन बढ़ने से संकट गहरा गया था। प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड की ओर से एक्यूआई में कमी लाने की दिशा में प्रयास शुरू किए गए थे, जो अभी तक चल रहे हैं। इसके तहत धूल उड़ाने वाली सड़कों पर लगातार पानी का छिड़काव कराया जा रहा है। प्रदूषण फैलाने वाले औद्योगिक इकाइयों पर नजर रखी जा रही है। शनिवार को धारूहेड़ा का एक्यूआई कम होकर 295 आ गया, जो अत्यंत खराब की कैटेगिरी से बाहर आ गया। भिवाड़ी औद्योगिक एरिया की तुलना में धारूहेड़ा का एक्यूआई अभी भी ज्यादा बना हुआ है।

बारिश के बाद राहत की संभावना

मौसम विभाग 27 अक्टूबर से आसमान में बादलों के बीच बूंदाबांदी या हल्की बारिश की संभावना जता रहा है। इस समय दिन के तापमान में वृद्धि से एक्यूआई में सुधार आया है। अगर जल्द बारिश होती है, तो प्रदूषण काफी हद तक साफ हो जाएगा। इससे लोगों को राहत की सांस मिलेगी। इस दौरान अगर तेज हवाएं चलती हैं, तो उससे भी प्रदूषण साफ होने में मदद मिलेगी। फिलहाल एक्यूआई में सुधार के बाद आसमान साफ होना शुरू हो गया है।

साइबर ठगी का दूसरा आरोपी काबू, दो दिन के रिमांड पर भेजा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

साइबर थाना पुलिस ने पुराने नोट के बदले लाखों रुपये का लालच देकर करीब 96 हजार रुपये की साइबर ठगी करने के मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस इस मामले में एक आरोपी को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है।

गत 9 जून को गांव जैनाबाद निवासी युद्धवीर सिंह ने अपनी शिकायत में बताया था कि उसने 4 जून को यूट्यूब पर पुराने नोट के बदले अधिक पैसे देने का विज्ञापन देखा था। उसने विज्ञापन में दिए गए नंबरों पर संपर्क करते हुए बताया कि उसके पास पांच रुपये का एक पुराना नोट है, जिस पर ट्रैक्टर छपा हुआ है। फोन रिसीव करने वाले ने उसे बताया कि इस नोट के बदले उसे 25 लाख रुपये मिल जाएंगे। इसके लिए उससे पहले 7200 रुपये यूपीआई से ट्रांसफर करने के लिए कहा गया। उसने यह राशि यूपीआई से ट्रांसफर कर दी। जो आरोपी ने उससे कुल 95820 रुपये अलग-अलग खातों में डलवा लिए। इसके बाद उससे और अधिक राशि की मांग की तो उसे ठगी का अहसास हुआ। साइबर थाना पुलिस ने ठगी का मामला दर्ज करके मामले में संलिप्त एक आरोपी को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। इस मामले में पुलिस ने एक और आरोपी राजस्थान के जिला भरतपुर के गोविंद नगर मडार रोड हाल किरायेदार कैप्टन मार्किट गाधौली दिल्ली निवासी दुष्यंत को भी गिरफ्तार कर लिया। आरोपी दुष्यंत ने नवीन डागुर का बैंक खाता साइबर ठगों को उपलब्ध कराने के लिए मध्यस्थ की भूमिका अदा की थी। पुलिस ने आरोपी को पेश अदालत करके पूछताछ के लिए दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया है।

रेवाड़ी। साइबर ठगी का आरोपी पुलिस टीम के साथ। फोटो : हरिभूमि

उड़ने के लिए तैयार फ्लाइंग कार

आसमान में उड़ते हवाई जहाज और हेलीकॉप्टर को तो हम सबने देखा है। अब बस कुछ ही वर्षों में आस-पास की दूरियों को तय करने के लिए फ्लाइंग कारें भी उड़ती हुई दिखने लगेंगी। कई विदेशी कंपनियां इस दिशा में पूरी तरह रेडी हो चुकी हैं तो अपने देश में भी इस बारे में जोर-शोर से तैयारी की जा रही है। भविष्य के नए हवाई सफर पर एक नजर।

टीकैब कंपनी चीन की ई20 एयरटैक्सी

कवर स्टोरी / एन. के. अरोड़ा

उड़ने वाली कारें यानी फ्लाइंग कार या रोडेबल एयरक्राफ्ट यानी ऐसी गाड़ियां, जो सड़कों पर चल भी सकें और जरूरत पड़ने पर उड़ान भी भर सकें। अब ये केवल हॉलीवुड की फिल्मों का हिस्सा भर नहीं हैं बल्कि ये हकीकत है। हां, यह बात अलग है कि अभी इसका उपयोग लोगों ने शुरू नहीं किया है। अभी ये कारें सीमित स्तर पर प्रोटोटाइप, परीक्षण, नियामक मंजूरी और टेस्ट फ्लाइट के दौर से गुजर रही हैं। अभी सड़क पर दौड़ने और उड़ान भरने वाली ये कारें, आम लोगों के लिए उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन चीन, जापान, अमेरिका और यूरोप के कई देशों में ये कारें जल्द से जल्द आम लोगों के घरों के गैराज में दिखने लगेंगी।

कई स्तरों पर हो रही तैयारी: साल 2025 के अंत तक दुनिया भर में कई कंपनियां ऐसी

स्काई ड्राइव, जापान की एयरटैक्सी

इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक ऑफ एंड लैंडिंग (वीटीओएल) कारों को पूरी तरह तैयार कर लेंगी, क्योंकि इन कंपनियों की फ्लाइंग कारों की प्रगति महत्वपूर्ण चरणों में है। कुछ देशों और कंपनियों ने तो अपनी कारों की सूची भी सोशल मीडिया पर जारी कर दी है। इस समय दुनिया भर के अलग-अलग देशों में करीब 250 ऐसी कंपनियां हैं, जो उड़ने वाली कारों यानी फ्लाइंग टैक्सियों या वीटीओएल परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं। कई प्रोटोटाइप पहले ही हवा में उड़ान भर चुके हैं, कुछ मानव पायलट के साथ और कुछ बिना इंसानी ड्राइवर के। उदाहरण के लिए टर्की में सीजेरी का प्रोटोटाइप और जापान में स्काइ डाइव का प्रोटोटाइप हवा में उड़ान भर चुका है। कई कंपनियां एयर टैक्सी शुरू करने की बिल्कुल व्यावहारिक योजनाएं बना चुकी हैं, तो कुछ देशों ने सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। कहने का मतलब उड़न कारें

जॉबी एविएशन, अमेरिका की ईवीटॉल

यानी, जमीन और हवा दोनों पर चलने वाली कारें भले अभी दुनिया में आम लोगों के इस्तेमाल में आना शुरू न हुई हों, पर इनके एक साथ पूरी दुनिया में इतनी बड़ी संख्या में प्रोजेक्ट काम कर रहे हैं कि दिन-रात इनके बारे में बातें होना स्वाभाविक है। इनके उज्ज्वल भविष्य को देखते हुए दुनिया के बड़े-बड़े उद्योगपति इन कारों पर भारी निवेश भी कर रहे हैं।

कई कंपनिया हैं एक्टिव: आज दुनिया के जिन देशों में प्रमुख कंपनियां ऐसी फ्लाइंग कारें बनाने में जुटी हुई हैं, उनमें संयुक्त राज्य अमेरिका में जॉबी एविएशन ने एफएए से एयर करियर प्रमाणपत्र हासिल किया है और डेल्टा एयरलाइंस के साथ साझेदारी की है। इसी तरह आर्चर एविएशन ने भी यूनाइटेड एयरलाइंस से 10 मिलियन डॉलर प्राप्त किया है। इसी तरह जेस्टन वन नामक एक व्यक्तिगत उड़ान वाहन भी अमेरिका में विकसित किया गया है, जिसकी कीमत 1 लाख 28 हजार डॉलर है और जिसे उड़ाने के लिए किसी पायलट लाइसेंस की जरूरत नहीं है। जबकि चीन एक्सपेंग एयरोहॉट दुनिया की पहली ऐसी कंपनी है, जिसने बिना पायलट के यात्री उड़ानों के लिए नियामक स्वीकृति प्राप्त कर ली है। इसने लैंड एयरक्राफ्ट करियर नामक मॉड्यूलर कार विकसित की है, जिसमें एक फोल्डेबल ईवीटीओएल है। टीकैब टैग कंपनी ने ई-20 नामक मानवयुक्त ईवीटीओएल विकसित की है। इसी तरह ब्राजील ने ईव एयर मोबिलिटी, जापान की स्काई ड्राइव और जर्मनी की लिलियम बोलोकॉप्टर कंपनियों ने भी अपनी-अपनी उड़न कारें विकसित कर ली हैं और इन सबकी हवा में उड़ने और जमीन में जरूरत पड़ने पर चलने वाली ये कारें परीक्षण और अपग्रेडेशन की प्रक्रिया से गुजर रही हैं। इन दिनों इसी काल्पनिक सच को हकीकत में बदलने के लिए विकसित देशों में दर्जनों उड़न कारें अपनी बुनियादी उड़ानें भर रही हैं या दूसरे शब्दों में ट्रेंड हो रही हैं।

ऐसे आई सुर्खियों में: फ्लाइंग कारों की चर्चा अचानक इसलिए बढ़ी है, क्योंकि पिछले दिनों दो उड़ने वाली कारें एक एयर शो के दौरान हवा में ही टकरा गईं और एक बड़ा हादसा हो गया। यह अलग बात है कि इसमें कोई जनहानि नहीं हुई। दरअसल, चीन के जिलिन में बीते 16 सितंबर 2025 की दोपहर को चल रहे चांगचुन एयर शो के दौरान एक्सपेंग एयरोहॉट की दो वीटीओएल आपस में टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गईं। इस टक्कर से एक यात्री घायल हो गया, जिसे जानलेवा चोट नहीं लगी। लेकिन इस दुर्घटना की वजह से रातों-रात पूरी दुनिया की आटोमोबाइल इंडस्ट्री में वीटीओएल कारों के किस्से पूरी तरह से छा गए और हर किसी को पता लग गया कि उड़ने वाली कारें अब विज्ञान कथा भर नहीं हैं, वास्तविक जिंदगी का हिस्सा बनने की कगार पर हैं। निकट भविष्य में इनका उपयोग शहरी परिवहन, आपातकालीन सेवाओं और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में बहुत कॉमन हो जाएगा।

सुरक्षा है बड़ा मुद्दा: जिस तरह इन दिनों चीन में हुई हवाई दुर्घटना के कारण दो एयर टैक्सियों के आपस में भिड़ जाने पर खूब चर्चा हो रही है, उससे उड़ने वाली कारों यानी ईवीटीओएल की तकनीकी सुरक्षा पर गंभीर सवाल उठ खड़े हुए हैं। माना जाता है कि ऐसी काल्पनिक कारों का यह पहला मिड एयर कॉलिशन है। लेकिन यह अकेला कारण भी नहीं है, जिसकी वजह से इन उड़न कारों की बातें हो रही हैं। दरअसल, अब नए मॉडल के नई लाइफस्टाइल को सपोर्ट करने वाले शहरों के बसाए जाने की बात भी हो रही है। इन्हीं नए शहरों की जरूरतों को ध्यान में रखकर अर्बन एयर मोबिलिटी पर जबर्दस्त चर्चा हो रही है, क्योंकि भविष्य के शहरों में लोगों के पास इतना समय नहीं होगा कि वे ट्रैफिक में घंटों फंसे रह सकें। इसलिए ऐसी कारों की जरूरत जबर्दस्त ढंग से पैदा होने वाली है, जो हवा में उड़कर मिनटों में एक जगह से दूसरी जगह कई किलोमीटर दूर पहुंच सकती हैं।

सिर्फ सुरक्षा का ही नहीं, वास्तव में इन वाहनों की उड़ान और लैंडिंग की अनुमति भी एक बड़ी समस्या होगी, जिस पर इन दिनों सिस्टमेटिक ढंग से प्लानिंग हो रही है। लोगों की उत्सुकता है कि एयर ट्रैफिक रेगुलेशन, पायलट ट्रेनिंग, बैटरी रिलायबिलिटी, इस तरह की सभी समस्याएं एक-एक करके हल हों ताकि उड़ने वाली कारें अब फिक्शन न रह जाएं।

बहरहाल, विशेषज्ञ कहते हैं कि इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सन 2030 तक दुनिया के अनेक बड़े शहरों के आसमान में हवा में उड़ान भरने वाली कारें दिखने लगेंगी। *

एक्सपेन एयरोहॉट ईवीटॉल, चीन

भारत में भी जल्द उड़ेंगी एयरटैक्सी

केवल विदेशों में ही नहीं अपने देश भारत में भी ईवीटॉल विकसित करने में कुछ कंपनियां सक्रिय हैं। डीजीसीए ने पंजाब की एक कंपनी के एयरटैक्सी मॉडल को डिजाइन अप्रूवल सर्टिफिकेट भी दे दिया है। एयरटैक्सी के टेकऑफ और लैंडिंग के लिए वर्टिपोर्ट बनाने की प्लानिंग पर भी काम किया जा रहा है। बेंगलुरु की एक कंपनी भी इस दिशा में एक्टिव है। सब कुछ प्लानिंग के अनुसार फाइनल होने पर वर्ष 2028 तक दिल्ली-एनसीआर में एयर टैक्सी का परिचालन शुरू हो सकता है। इसके बाद कोलकाता, मुंबई जैसे अन्य मेट्रो शहरों में भी एयरटैक्सी चलने की संभावना है।

अवेयरनेस / संध्या सिंह

इन दिनों लगभग रोज ही साइबर फ्रॉड की अनेक घटनाएं घटित हो रही हैं। साइबर क्रिमिनल्स नए-नए तरीकों से लोगों को अपने जाल में फंसा रहे हैं। ऐसे में जरा सी लापरवाही आपका भारी आर्थिक नुकसान करा सकती है। इसलिए साइबर वर्ल्ड में हमेशा एलर्ट रहें।

खूब हो रहा साइबर फ्रॉड ना बरतें कोई लापरवाही

आजकल सोशल मीडिया पर साइबर तस्करी, साइबर अपराध, वित्तीय धोखाधड़ी, डीपफेक में काफी बढ़ोत्तरी हो रही है। ऐसी धोखाधड़ी अब आम हो गई है।

सोशल मीडिया पर फ्रॉड नेटवर्क: हाल के दिनों में लोगों को व्हाट्सएप पर नकली ई-चालान मिलना, नकली बिजली, पानी, गैस, केबल के बिल मिलने जैसी चीजें आम हो गई हैं, जिनमें व्हाट्सएप पर मैसेज भेजा जाता है और उसमें यह वॉर्निंग दी जाती

है कि यदि समय पर बिल का भुगतान नहीं किया गया, तो उनका कनेक्शन काट दिया जाएगा। हड़बड़ी में लोग अकसर व्हाट्सएप में आए उस बिल पर क्लिक कर देते हैं और कुछ समय बाद उन्हें पता चलता है कि उनके खाते से काफी पैसे निकाल लिए गए हैं। यहां तक कि फेसबुक पर भी बहुत रोचक कहानियां बनाकर उन्हें डाल दिया जाता है और जब लोग उन्हें पढ़कर आगे की कहानी जानने के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करते हैं, तो उस लिंक पर कई बार एडल्ट साइट्स से उनका सामना होता है या गलत लिंक पर क्लिक करने के कारण वे साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं।

हो रहा भारी नुकसान: साइबर क्राइम अब एक ऐसी समस्या के रूप में सामने आ रहा है, जो हमारा पैसा और मन की शांति दोनों को खत्म कर रहा है। साइबर अपराध पर 254वीं संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट ने इस बात का खुलासा किया है कि साइबर ठगी के जरिए 31,500 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हुआ है। इस साल साइबर अपराधी एक साथ कई मोर्चों पर सक्रिय हैं। संसदीय रिपोर्ट भी इस बात की पुष्टि करती है कि साइबर अपराधी एक साथ कई हथकंडे आजमा रहे हैं। लोग यह समझते हैं कि इनसे बचने के उपाय, अत्यधिक कुशल हैकर्स का काम है, लेकिन इससे आम लोगों को यह समझना होगा कि उनको नेविगेट करने की क्षमता हम सबमें होनी जरूरी है।

बीते जुलाई माह में गुरुग्राम पुलिस द्वारा एक ऐसे कॉल सेंटर का भंडाफोड़ किया गया, जहां जालसाज वीआईपी नंबर्स और पुलिस स्टेशन की पृष्ठभूमि का एआई द्वारा उपयोग करके वीडियो कॉल पर कानून अधिकारी के रूप में पेश आते थे, जो लोगों को उनके नाम पर एक पैकेट में अवैध वस्तुएं होने का हवाला देकर उन्हें गिरफ्तार कर लेने के लिए डराते थे और उन्हें यह धमकी देते थे कि यदि वह तुरंत अपनी जमानत या वैरीफिकेशन के लिए एक निश्चित राशि का भुगतान नहीं करते, तो उन्हें कानूनी कार्यवाही का सामना करना पड़ सकता है। पुलिस द्वारा छापे में स्क्रीन स्क्रिप्ट और जाली आईडी मिली, इसके बाद कई गिरफ्तारियां हुईं, जिनका लिंक दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के नेटवर्क से था, जो सीधे भारतीयों को अपना निशाना बना रहे थे।

जागरूकता है जरूरी: यह सही है कि आज के दौर में साइबर अपराध इतने जटिल हो गए हैं और लोगों को ठगी का शिकार बनाने के उनके तरीके इतने दबे छिपे होते हैं कि आम लोगों में जागरूकता का अभाव होने के कारण वे सहजता से इसका शिकार हो जाते हैं। मसलन, अगर आपको कोई पुलिस अधिकारी होने का दावा करने वाले का कॉल आता है तो उनसे यह पूछा जा सकता है कि वीडियो कॉल के जरिए भला गिरफ्तारी कैसे हो सकती है? इस तरह की समझदारी और अवेयरनेस से फ्रॉड से बच सकते हैं।

बिना डरे रहें सजग: इन जटिल साइबर अपराधों के खिलाफ सुरक्षा के समाधान या तरीके इतने कठिन नहीं है, जितने हम समझते हैं। हमें हर चीज पर सवाल उठाना सीखना होगा और जीरो ट्रस्ट नीति अपनानी होगी। एक बार जब हम ऐसे मामले में जीरो ट्रस्ट नीति अपनाने लगते हैं तो साइबर सुरक्षा आसान

हो जाती है। किसी भी लिंक अटैचमेंट या मैसेज पर जाने से पहले बिना सोचे-समझे क्लिक नहीं करना चाहिए, क्योंकि साइबर जगत में हर अंजान को जांचने-परखने की नीति अपनाएं। किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले सोचें, विचार करें। वेडिंग इंविटेशन या ई-चालान की पीडीएफ/जेपीईजी फाइल होनी चाहिए, न कि एपीकेएस। एपीकेएस पर क्लिक करने का ही मतलब है आप हैकर को क्लिक कर रहे हैं। किसी को भी अपना ओटीपी या यूपीआई पिन या स्क्रीन शेयर न करें। क्योंकि कानून आपको इन्हें साझा करने के लिए नहीं कह सकता। ऑड यूआरएलएस, नए हैंडल्स, मिस मैच्ड लोगो, भ्रम पैदा करने वाली ईमेल आईडी पर क्लिक न करें। अगर आपके खाते से पैसों की ठगी हो जाती है तो 1930 नंबर पर कॉल करें और अपने बैंक को तुरंत फोन करके इसके बारे में सूचित करें। कुल मिलाकर ऑनलाइन ठगी से बचने के लिए बिना डरे एलर्ट रहना जरूरी है। *

व्यंग्य / भूपेंद्र भारतीय

लचकलाल को भी मिले नोबेल पुरस्कार

भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि, भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थान तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह भी क्यों नहीं प्रसिद्ध बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं!

हर साल अक्टूबर के महीने में नोबेल पुरस्कार का हल्ला रहता है। इस बार भी हल्ला रहा। लचकलाल फिर नोबेल पुरस्कार के लिए बेचैन हुए। वह नोबेल पुरस्कार चाहते हैं, भ्रष्टाचार के मामले में। उनका कहना है, इस क्षेत्र में उनसे अच्छा और श्रेष्ठ कार्य किसी ने नहीं किया है, ना ही कोई कर सकता है। इस क्षेत्र में उन्होंने जितने नवाचार किए हैं, उतने तो अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश ने अपना माल बेचने के लिए विश्व शांति के क्षेत्र में भी नहीं किए होंगे।

लचकलाल का यह कहना है कि भ्रष्टाचार में गोपनीयता के मामले में उन्हें नोबेल पुरस्कार मिलना चाहिए। वह कैसे-कैसे टेबल के नीचे से सेवा शुल्क लेकर जनसेवा करते रहे हैं, वो रिकॉर्ड बने हैं। लचकलाल भ्रष्टाचार में यूपीआई की भी सुविधा ले रहे हैं। उन्होंने भ्रष्टाचार को ऑन लाइन कर दिया है। उनकी टेबल पर घूस ऑन लाइन भी ली जाती है-जल्द यह तख्ती भी लग सकती है। लचकलाल को लगता है, वे अपनी भ्रष्टाचार की सेवाओं से विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। भ्रष्टाचार को उन्होंने अब शासकीय शिष्टाचार मान लिया है। इस प्रतिभा के पीछे उन्होंने ऐसी दिव्य दृष्टि पाई है कि एक बार में ही वह अच्छे से अच्छे ईमानदार अधिकारी को देखते ही समझ जाते हैं, यह अधिकारी अपनी सेवा कितने में प्रदान करेगा? इसकी सेवा का लाभ कैसे लेना है? इसकी निष्ठा का कितना दाम लगाना है? लचकलाल यह सब अपनी भ्रष्टाचारी दिव्य दृष्टि से कुछ ही दिनों में ताड़ लेते हैं कि साहब टेबल के कितने ऊपर और टेबल के नीचे कितने तक धंसे हैं? लचकलाल ने अपनी इस दिव्य दृष्टि और कला के सहारे बहुत से नवागत अधिकारियों, कर्मचारियों को भी भ्रष्टाचार के मामले में प्रशिक्षित किया है। कोई कितना ही ईमानदार व्यक्ति शासकीय सेवा में 'सेवा परमोधर्मः' की भावना से आए, लेकिन उनकी दिव्य दृष्टि उसे भ्रष्टाचार की कला बहुत ही जल्दी सीखा देती है। इस कला को सीखने के बाद वह नवागत अधिकारी भ्रष्टाचार के दूध में पताशे(बताशे) की तरह घुल जाता है। लचकलाल भ्रष्टाचार की चाशनी बनाने में उसी तरह से दक्ष हैं, जैसे इन दिनों मिस्टर ट्रंप विश्व शांति की चाशनी बनाने के लिए अपनी वैश्विक चम्मच हिला रहे हैं। वह बात अलग है कि चाशनी बन नहीं रही है। इस बार भी तथाकथित विश्व शांतिदूत नोबेल पुरस्कार के लिए चम्मच हिलाते ही रह गए।

खैर! मिस्टर लचकलाल अपने अभियान में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। उन्हें भ्रष्टाचार की चाशनी बनाने और उसमें से जलेबी निकालने से कोई नहीं रोक सकता है। उनके पास भ्रष्टाचार के मामले में भ्रष्टों का जनाधार है। वे अपनी इस कला से लोकतंत्र की सेवा करना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि इस कला से राष्ट्र निर्माण भी आसानी से किया जा सकता है। कम बजट में सड़कों, पुलों, सरकारी भवनों और सेवाओं का कार्य पूरा हो जाता है। भ्रष्टाचार उनके लिए सरकारी कार्यशैली का अभिन्न हिस्सा है। उसके बगैर अधिकारियों को कार्य करने में मजा नहीं आता और सरकारों को सरकार चलाने में मजा नहीं आता। लचकलाल की मानें तो वह जनता और सरकार के बीच भ्रष्टाचार, पुल का काम करते हैं। भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह क्यों नहीं बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं! उन्हें लगता है कि वह भ्रष्टाचार विषय के मामले में बुद्धिजीवी बन गए हैं। अब आखिर उन्हें क्यों नहीं इस क्षेत्र में सेवा, शोध और नवाचार के लिए नोबेल पुरस्कार मिले! *

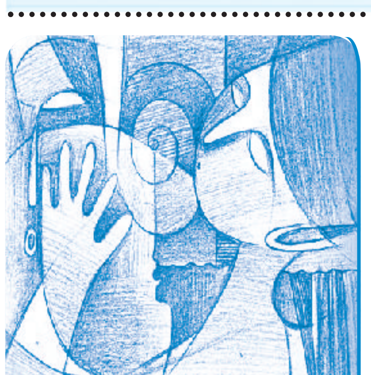

कविता / आरती आस्था

छोड़ना

मां छोड़ देती है
सब कुछ
अपने बच्चे के लिए।
वही बच्चा होकर बड़ा
छोड़ देता है
मां को
अपने प्रेम के लिए।
छोड़ते हैं दोनों ही
अपने-अपने प्रेम के लिए।
पर लगाना अनुमान
है लगभग असंभव
किसका छोड़ना
और किसका छूट जाना
होता है
ज्यादा पीड़ादायक।

लघुकथा / अलका जैन 'आराधना'

प्रेरणा

आईआईटी में सेलेक्शन न होने से हताश रौनक, रेल की पटरियों के किनारे चला जा रहा था। एक पल के लिए उसके मन में खुद को खत्म करने का ख्याल आ रहा था। अचानक मम्मी के शब्द उसके कानों में गूंजने लगे, 'रेल की पटरियां रेल को गंतव्य तक पहुंचाती हैं। बेटा, इनसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा लेनी चाहिए... क्योंकि वास्तव में चलना ही जिंदगी है।'

रौनक के चेहरे पर मुस्कान आ गई। वह सोच रहा था कि आईआईटी में सेलेक्शन ना होना तो एक पड़ाव भर है, जीवन में और भी बहुत कुछ है करने के लिए। अब वह मुस्कुराते हुए घर वापसी का फैसला कर चुका था। घर पहुंचा तो मम्मी-पापा बेसब्री से उसका ही इंतजार कर रहे थे। दोनों ने एक-साथ उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'तुम्हारा पसंदीदा मूंग की दाल का हलवा बनाया है, इसे खाओ और नई राह पर आगे बढ़ने की शुरुआत करो। जिंदगी किसी मोड़ पर खत्म नहीं होती, नई शुरुआत कहीं से भी की जा सकती है।'

रौनक अपने मम्मी-पापा के पैरों में झुक गया। उसे लग रहा था कि रेल की पटरियों ने उसे जीवन से पलायन की नहीं जीवन को गले लगाने की प्रेरणा दे दी। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

प्रेमानुभूति में भीगी कविताएं

प्रेम एक ऐसा विषय है, जिस पर असंख्य कविताएं और कहानियां लिखी जाती रही हैं लेकिन कोई भी रचना इसके बारे में स्थायी या अंतिम सच साबित नहीं हो पाती। दरअसल, यह इंसानी मनोजगत में उपजने वाली भावनाओं से निर्मित ऐसी दुनिया होती है, जिसे हर इंसान अलग तरीके से अनुभूत करता है। सविता सिंह के नए कविता संग्रह 'प्रेम भी एक यातना है' की कविताएं प्रेम के ऐसे ही अनदेखे, अबूझ क्षितिज से हमारा परिचय कराती हैं। यहां उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियां बड़ी कोमलता के साथ प्रकृति और समष्टि में समाहित हो जाती हैं। इसी बिंदु पर उनकी कविताओं के व्यापक अर्थ हमारे सामने उद्घाटित होते हैं। प्रेम के जीवन में पदार्पण का मनोहारी बिंब इन पंक्तियों में देख सकते हैं, *'पूरा-पूरा दिन संगीत सा बजता रहता है आजकल/ बेजान दोपहरें भरी रहती हैं तितलियों के रंगों से/ मधुमक्खियों के पंखों से उपजती धुनों से।'* (प्रेम) इसी तरह एक अन्य कविता 'प्रेमरत' की ये पंक्तियां शरीर के स्तर से बहुत गहन मन-आत्मा के किसी तल पर घटित हो रही अनुभूतियों को व्यक्त करती हैं, *'अभी हमारे पास कहने को क्या था/हम तो भाषा में थे ही नहीं/हमारे पास महज अव्यक्त आवाजें थीं कुछ/ शब्द दूर थे हमसे।'* कह सकते हैं, आज के अमानवीय होते जा रहे हिंसा से आक्रांत युग में ये कविताएं, हमारे भीतर कुछ बेहतर बचे रहने की उम्मीद कायम रखने का संबल देती हैं। *

पुस्तक: प्रेम भी एक यातना है (कविता संग्रह), **लेखिका:** सविता सिंह, **मूल्य:** 199 रुपए, **प्रकाशक:** राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली

आयोजन
वीना गौतम

राजस्थान में अजमेर के निकट पुष्कर में आयोजित होने वाला धार्मिक-सांस्कृतिक पुष्कर मेला, पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यहां की भौगोलिक विशिष्टता और इससे जुड़ी धार्मिक मान्यताएं इस स्थल को और भी महत्वपूर्ण बना देते हैं। आगामी 30 अक्टूबर से 5 नवंबर तक आयोजित होने वाले इस मेले की खासियतों पर एक नजर।

देश की धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना का संगम पुष्कर मेला

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश की आत्मा उसकी लोक-संस्कृति और धार्मिक परंपराओं में बसती है। ऐसी ही लोकधर्मी परंपराओं का वाहक है पुष्कर मेला। पुष्कर मेला न केवल राजस्थान बल्कि संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का प्रतीक है। पुष्कर मेला हर साल कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होता है।

मेले से जुड़ी धार्मिक मान्यताएं: पुष्कर भारत का अद्वितीय नगर है। सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा का देश में एकमात्र मंदिर यहीं स्थित है। पुष्कर की धार्मिक मान्यता यह है कि ब्रह्माजी सृष्टि की रचना करने के बाद यज्ञ करने के लिए एक पवित्रस्थल की खोज कर रहे थे, तब एक कमल पुष्प उनकी हथेली से गिर पड़ा और यह जहां गिरा, उस स्थान पर पुष्कर झील बन गई। इसलिए यह स्थल पुष्कर तीर्थ कहलाता है।

पुष्कर झील में स्नान करते श्रद्धालु

कार्तिक पूर्णिमा के दिन इस झील में स्नान करना अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन ब्रह्माजी स्वयं झील के जल में स्नान करने के लिए आते हैं, जो व्यक्ति इस दिन यहां स्नान करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। यही कारण है कि पुष्कर मेला के समय देश के कोने-कोने से लाखों श्रद्धालु और साधु-संत यहां पवित्र स्नान के लिए पहुंचते हैं। धार्मिक दृष्टि से यह मेला केवल स्नान या पूजा का आयोजन नहीं बल्कि धर्म, भक्ति और लोकआस्था की जीवंत अभिव्यक्ति है। इस अवसर पर पुष्कर झील के घाटों पर होने वाले दीपदान और आरती का दृश्य भारतीय अध्यात्म का जीवंत रूप प्रस्तुत करता है।

लोकजीवन-परंपराओं का महाकुंभ: पुष्कर मेला सिर्फ भारतीय लोक-संस्कृति का ही बहुत बड़ा उत्सव नहीं है, यह पशु व्यापार का भी बहुत बड़ा मेला है। यहां समूचे भारत के ग्रामीण जीवन की जीवंत झांकी देखने को मिलती है। राजस्थान के विभिन्न जिलों से लेकर इस मेले में हरियाणा, पंजाब, गुजरात और उत्तर प्रदेश तक के ग्रामीण लोग अपनी पारंपरिक वेशभूषा, गीत, नृत्य और हस्तशिल्प के साथ आते हैं। पुष्कर मेले में होने वाले लोकनृत्य प्रतियोगिताओं में मटकी दौड़, ऊंट सजावट, ग्रामीण खेल, लोकसंगीत, कठपुतली, नाटक और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की धुनें, भारत की विविधता में एकता का अद्भुत संदेश देती हैं। यह मेला वास्तव में ग्रामीण भारत की सजीव आत्मा पेश करता है। यहां महिलाएं पारंपरिक लहंगे, ओढ़नी आदि में सजी दिखती हैं और पुरुष रंग-बिरंगी पगड़ियों में सजते हैं। इसी वेशभूषा में ये लोग आयोजित होने वाले लोक गीत-संगीत के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। यहां की रंग-बिरंगी भीड़ वास्तव में भारत की जीवंत संस्कृति की धड़कन है, जिसने आधुनिकता के बीच भी अपनी जड़ें मजबूती से जमा रखी हैं।

व्यापार-पर्यटन का अवसर: जैसा हम सब जानते हैं कि पुष्कर मेले में भारत का सबसे बड़ा पशु मेला भी लगता है। विशेष रूप से ऊंट और घोड़ों के व्यापार के लिए। राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में पशुधन आजीविका का महत्वपूर्ण आधार है। इस मेले के दौरान यहां हजारों ऊंट, घोड़े और गाय, बिकने के लिए आते हैं। इस खरीद-फरोख्त के जरिए स्थानीय अर्थव्यवस्था को खूब बल मिलता है। इसके साथ ही इस मेले का पर्यटन उद्योग के लिहाज से भी बहुत महत्व होता है। पुष्कर मेले के दौरान देश-विदेश से लाखों सैलानी यहां आते हैं। विदेशी पर्यटक विशेषकर यहां भारतीय संस्कृति, योग, संगीत और अध्यात्म का जीवंत अनुभव करने आते हैं। इस मेले में स्थानीय हस्तशिल्प, कपड़े, गहने और लोककला की बिक्री से ग्रामीण कारीगरों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

आयोजित होता है बहुत बड़ा पशु मेला

राष्ट्रीय लैंडमार्क के रूप में प्रतिष्ठित: आज पुष्कर मेला केवल एक पारंपरिक आयोजन भर नहीं है। यह वैश्विक सांस्कृतिक उत्सव बन चुका है। भारत सरकार और राजस्थान पर्यटन विभाग ने इसे ग्लोबल फेयर के रूप में विकसित किया है। सोशल मीडिया और यात्रा चैनलों के कारण पुष्कर मेले की पहचान दुनिया के कोने-कोने में पहुंच चुकी है। पुष्कर मेले के दौरान यहां योग शिविर, कल्चरल वर्कशॉप और डेजर्ट सफारी जैसे आयोजन पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। आज जब अपनी सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत बहुत करीने से प्रस्तुत कर रहा है, तब पुष्कर इस गतिविधि का महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर उभरा है। आज पुष्कर मेला अपनी लोक-आध्यात्मिक पहचान के लिए राष्ट्रीय लैंडमार्क की ख्याति हासिल कर चुका है। यह मेला दर्शाता है कि भारतीय सभ्यता, लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति में भी फलती-फूलती है। *

अनोखा भौगोलिक स्थल भी है पुष्कर

पुष्कर अरावली पर्वतमाला के बीच में स्थित है। जहां रेगिस्तान का शुष्क भू-भाग और झील का शांत जल एक अद्भुत विरोधाभास रचते हैं। यह क्षेत्र पर्यावरणीय दृष्टि से दुनिया के विशिष्ट क्षेत्रों में गिना जाता है। क्योंकि राजस्थान में स्थित यह ऐसा क्षेत्र है, जहां जल और मरुस्थल का साझा अस्तित्व देखने को मिलता है। ऐसी विविधता का दूसरा उदाहरण दुर्लभ है। अक्टूबर और नवंबर के महीने में पुष्कर का तापमान बेहद सुहावना होता है। इस कारण इस मौसम में यहां देश-विदेश के लाखों पर्यटक घूमने के लिए आते हैं। पर्यटकों के लिए यह मौसम और पुष्कर की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति महत्वपूर्ण आकर्षण का जरिया बन जाती है। झील के चारों ओर फैले घाट, मंदिरों की कतारे और दूर तक फैले रेत के टीले, इस स्थान को एक आध्यात्मिक केंद्र बना देते हैं। यही कारण है कि आज के दौर में पुष्कर की प्रतिष्ठा एक वैश्विक, सांस्कृतिक स्थली के रूप में भी है।

दीपावली के बाद कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देव उठनी, देवोत्थानी या प्रबोधिनी एकादशी पर्व मनाते हैं। पुराणों में इस दिन की पूजा, व्रत का बहुत महत्व बताया गया है। इसके महात्म्य के बारे में जानिए।

अत्यंत पुण्यकारी-शुभ फलदायी प्रबोधिनी एकादशी व्रत-पूजन

पर्व-परंपरा
प्रभा पारिक

चातुर मास वर्षा काल के चार महीनों के शयन के बाद जब देव उठते हैं, उस दिन कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि होती है। इसी शुभ अवसर से मनुष्यों को देवताओं के आह्वान का अवसर प्राप्त होता है। इसी तिथि से मांगलिक कार्यों, जैसे गृह प्रवेश, विवाह आदि आरंभ होते हैं।

धार्मिक मान्यता: प्रबोधिनी एकादशी की मंगल बेला पर भगवान विष्णु का विवाह शालीग्राम रूप में वृंदा तुलसी के साथ किया जाता है। सुबह तुलसी के चौरे, क्यारी, गमले को साफ करके गेरू, चूने से मांड़ने अथवा रंगोली बना कर सजाया जाता है। फूल, धूप, दीप, आरती की जाती है। मौसमी फलों के साथ मूली, केला, रूई, ग्वार फली, सुआली आदि अर्पण करते हैं। शाम के समय प्रतीकात्मक रूप से घरों में, मंदिरों में तुलसी का विवाह शालिग्राम जी के साथ रचाया जाता है। इस विवाह में घर में पुत्री के विवाह में दिया जाने वाला श्रंगार और सुहाग की वस्तुएं अर्पित की जाती हैं। ठीक वैसे ही जैसे हम अपने घर-परिवार की कन्याओं के विवाह पर करते हैं। ये श्रंगार की सामग्री किसी भी नव-विवाहिता स्त्री, पुरोहित या सुहागन को देने की प्रथा है। इस दौरान मंगल गीतों के साथ इस उत्सव का आयोजन किया जाता है। जिस घर में कन्यादान का अवसर न मिलने की स्थिति हो, वे तुलसी विवाह को आयोजित करके कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

व्रत का महात्म्य: पुराणों में बताया गया है कि कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के व्रत का फल एक सहस्त्र अश्वमेघ यज्ञों और सौ राजसूय यज्ञों के बराबर माना जाता है। जिस वस्तु या पद या आकांक्षा को प्राप्त करना कठिन लगे, इस व्रत को करने से वो सहज ही प्राप्त हो जाती है। इस दिन रात्रि जागरण का विशेष महत्व है। माना जाता है कि प्रबोधिनी एकादशी के दिन किए गए व्रत, दान-पुण्य का फल, समस्त तीर्थों की यात्रा करने, गौ, स्वर्ण, भूमि आदि के दान से मिलने वाले फल के समतुल्य होता है। इस दिन व्रत और पूजन से निःसंतान को संतान की प्राप्ति होती है। यह व्रत उद्धार करने वाला और भगवान में आस्था बढ़ाने वाला माना जाता है। इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करने से भगवान नारायण प्रसन्न होते हैं। साधक के पितरों को सद्गति की प्राप्ति होती है। पिछले हजार जन्मों में किए गए पाप भी इस एकादशी को रात्रि-जागरण करते हुए श्री नारायण जप करने से नष्ट हो जाते हैं। इस दिन व्रत के दौरान श्रद्धापूर्वक 'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय' का जाप करना बहुत कल्याणकारी और पुण्य फलदायी होता है।

मनाते हैं कई रूपों में: प्रबोधिनी एकादशी के पर्व को अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है। यही वजह है कि विभिन्न राज्यों में इसे अलग-अलग तरह से मनाते हैं। इस दिन को पवित्र मानते हुए नर के रूप में नारायण एवं नारी के रूप में नारायणी की स्तुति करते हैं। तुलसी का महत्व, हमारे स्वास्थ्य, सुख समृद्धि, वास्तु से जोड़कर देखा जाता है। गुजरात में दीपावली के पूर्व की एकादशी से देव उठनी एकादशी तक प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर घर के द्वार पर रंगोली, तुलसी पूजा और दीपमाला सजाने की प्रथा है। यह कार्तिक पूर्णिमा के दिन दीपमाला के साथ पूर्ण होती है। *

विशिष्ट पेड़ / वीना

कई तरह से उपयोगी फालसे का पेड़

फालसा का वैज्ञानिक नाम ग्रेविया एशियाटिक है। यह एक छोटा झाड़ीदार पेड़ होता है, जो गर्म और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में उगता है। फालसा को अपने देश में एक लोकप्रिय फल के रूप में जाना जाता है। इसका स्वाद खट्टा, मीठा और ताजगी भरा होता है। यह पेड़, हरे, अंडाकार, मोटे और खुरदरे पत्तों वाला होता है, इसमें छोटे सफेद या हल्के गुलाबी फूल आते हैं, जबकि छोटे गोलाकार, नीले या काले रंग के फल लगते हैं।

कई राज्यों में होती है खेती: फालसे का पेड़ देश के ज्यादातर हिस्सों में पाया जाता है। मसलन, उत्तर भारत में पंजाब, हरियाणा। मध्य भारत में महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश। पश्चिमी भारत में राजस्थान, गुजरात तथा पूर्वी भारत में बिहार, झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल आदि में भी फालसे की खेती की जाती है। इस तरह देखें तो यह लगभग भारत के हर क्षेत्र में उगता है। दरअसल, यह गर्म और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से फलता-फूलता है। दोमट और हल्की बलुई मिट्टी में विशेष तौर पर फालसा का पेड़ तेजी से बढ़ता और विकसित होता है। अगर व्यावसायिक तौर पर इसकी खेती करें तो एक से दो मीटर की दूरी पर पौधे लगाए जाने चाहिए, समय-समय पर इसकी पुरानी टहनियों को काटते रहने से इसका विकास तेजी से होता है और पैदावार भी अच्छी होती है।

आर्थिक रूप से लाभकारी: फालसे की खेती से किसानों को कई तरह के लाभ होते हैं। फालसा के छोटे पेड़ हर साल 5 से 10 किलोग्राम तक फल देते हैं और अगर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देखें तो 8 से 10 टन फालसे का उत्पादन हो जाता है। फालसे की खेती में लागत बहुत कम आती है। क्योंकि इसे खाद पानी की उतनी जरूरत नहीं पड़ती, जैसे दूसरे फल के पेड़ों को पड़ती है। फालसा, पेड़ लगाने के पहले या दूसरे वर्ष में ही फल देने लगता है। ताजे फलों का स्थानीय बाजार भी काफी आकर्षक है। फालसे का पेड़ सामान्यतः 10 से 15 सालों तक फल देता है।

स्वास्थ्य के लिए लाभकारी: फालसे में कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं। जैसे- विटामिन-ए, बी-3 और सी। साथ ही इसमें पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन और फास्फोरस जैसे खनिज तत्व भी पाए जाते हैं। फालसे में एंटीऑक्सीडेंट्स, एंटीमाइक्रोबिअल और एंटीइंफ्लेमेट्री गुण भी होते हैं, इसलिए फालसा की अच्छी-खासी मांग आयुर्वेदिक औषधियों में भी होती है। इसके अलावा फालसे के फल की मांग जूस, शर्बत, मुरब्बा आदि बनाने में भी होती है। *

नदी गाथा
निनाद गौतम

कोसी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है, यह हम सब जानते हैं। लेकिन इसी के साथ सच्चाई यह भी है कि बिहार की जीवनरेखा या कहें बिहार का हर्ष भी यही कोसी नदी है। इस नदी की विशेषताओं के बारे में जानिए।

बिहार का शोक ही नहीं हर्ष भी है कोसी नदी

बिहार का शोक और हर्ष कही जाने वाली कोसी नदी का उद्गम हिमालय की पर्वत श्रेणियों में नेपाल में होता है। 720 किलोमीटर लंबी यह नदी नेपाल में 441 किलोमीटर और बिहार में करीब 288 किलोमीटर बहती है। यह बिहार में सुपौल जिले में प्रवेश करती है और मधेपुरा, सहरसा, पूर्णिया, अररिया होते हुए कटिहार जिले में कुरसेला के पास गंगा में मिल जाती है।

इसलिए कहते हैं शोक: कोसी को बिहार का शोक इसलिए कहते हैं, क्योंकि हिमालय से आने वाली यह बहुप्रवाही नदी जब बिहार में प्रवेश करती है, तो इसका बहाव बहुत तेज होता है। जिस कारण यह बार-बार अपना मार्ग बदलती है। पिछली ढाई सदियों में कोसी नदी 120 किलोमीटर पश्चिम की ओर खिसककर अपना मार्ग बदल चुकी है। क्योंकि इस हिमालयी नदी में नेपाल में तीन सहायक नदियां अरुण, तामूर और सुनकोशी भी आ मिलते हैं, इसलिए जिस समय यह बिहार में घुसती है, तो इसका बहाव इतना तेज होता है कि लगभग हर साल यह नदी बिहार में बाढ़ लाने का कारण बनती है ही, यह हर साल अपने तटबंध तोड़कर प्रदेश के उत्तरी जिलों में हाहाकार मचा देती है। इसलिए कोसी को बिहार का शोक कहते हैं। इसके चलते हर साल बिहार को करोड़ों रुपए की आर्थिक हानि और काफी लोगों की जनहानि होती है।

इसलिए कहलाती है हर्ष: सच्चाई यह भी है कि एक तरफ जहां कोसी बिहार का शोक है, वहीं दूसरी तरफ यह बिहार की जीवनरेखा भी कही जाती है। क्योंकि गंगा की तरह ही हिमालयी क्षेत्र से निकलने वाली यह नदी हर साल बाढ़ के समय अपने साथ जो पोषक तत्वों से भरी गाद या सिल्ट लाती है, उससे उत्तर बिहार की मिट्टी बेहद उपजाऊ हो जाती है। कोसी परियोजना के तहत लाखों हेक्टेयर जमीन में सिंचाई होती है और बिहार में उत्तम दर्जे की खेती संभव होती है। यही नहीं कोसी नदी का पानी पीने और कृषि दोनो में इस्तेमाल होता है। साथ ही कोसी बिहार और नेपाल को जोड़ने वाली वह नदी है, जो सीमांचल और मिथिला के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन को बहुत गहरे तक प्रभावित करती है। यह नदी मिथिला और सीमांचल क्षेत्र की लोकगाथाओं और लोकगीतों का हिस्सा है। इसे मातृस्वरूपा माना जाता है और लोकगीतों और त्योहारों में कोसी का जिक्र आता है। कोसी नदी के पानी से बनने वाली विद्युत ऊर्जा से तटबंधीय सड़कें और क्षेत्रीय विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस तरह अगर कोसी नदी ने बार बार बाढ़ और तबाही दी है, तो वहीं इसी ने बिहार को उपजाऊ कृषि व्यवस्था, सिंचाई की सुविधा और कृषि आधारित समृद्ध जीवन भी दिया है।

बिहार में होता है तेज प्रवाह: जब तक कोसी नेपाल में बहती है यह इतनी बड़ी और भयावह वेग वाली नदी नहीं होती, जितना बिहार के सुपौल जिले में प्रवेश के बाद फूटती है। कोसी नदी में प्रवाहित जल की मात्रा 2166 क्यूबिक मीटर प्रति सेकेंड है, जबकि मानसून के दिनों में इसका यही प्रवाह 18000 क्यूबिक मीटर प्रति सेकेंड हो जाता है, इससे इसके प्रचंड वेग का अंदाजा लगाया जा सकता है। कोसी नदी का कैचमेंट एरिया लगभग 74,500 वर्ग किलोमीटर (नेपाल और भारत में मिलाकर) है। इसीलिए मानसून के मौसम में इसका जलप्रवाह देश की दो बड़ी गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के बाद सबसे ज्यादा होता है। *

बॉलीवुड / हेमंत पाल

एक समय तक ग्रामीण परिवेश और गांव की मिट्टी की सोंधी महक वाली फिल्में खूब बनती और पसंद की जाती थीं। लेकिन जैसे-जैसे व्यावसायिकता हावी होती गई और लोगों के जीवन में शहरीकरण बढ़ता गया, फिल्मी पर्दे से गांव गायब होने लगे। फिल्मों के बदलते ट्रेंड पर एक नजर।

फिल्मी कहानियों में अब नजर नहीं आते गांव

हाल के वर्षों में आई हिंदी फिल्मों की बात करें तो उसमें गांव और ग्रामीण परिवेश की कहानियां बिल्कुल गायब रही हैं या न के बराबर ही नजर आई हैं। कथानकों से गांव विलुप्त होने का मतलब है, देश की 60% आबादी सिनेमा से गायब हो गई। अब जो फिल्में बनाई जा रही हैं, उनकी कहानियां 40% शहरी आबादी पर केंद्रित रहती हैं। इस सच्चाई को भी नकारा नहीं जा सकता कि गांव के जीवन की कहानियों से हिंदी सिनेमा का बॉक्स ऑफिस समृद्ध नहीं हो सकता। लेकिन समानांतर सिनेमा का तो मूल आधार ही ग्रामीण पृष्ठभूमि होती है, उसे ही इन कहानियों का प्रतिबिंब कहा जाता है। 'अंकुर', 'पार', 'दो बीघा जमीन', 'सूरज का सातवां घोड़ा' और 'अंतर्नाद' जैसी फिल्में ग्रामीण भारत का प्रतिनिधित्व करने में सफल रहीं। लेकिन अब ऐसी फिल्में भी नहीं बनती हैं।

गांवों से दूर हो रही फिल्में: याद कीजिए कि पिछले कुछ सालों में ऐसी कोई नई फिल्म देखी, जिसमें गांव, वहां का जीवन और गांव वालों की पीड़ा नजर आई हो! हाल ही में एक फिल्म 'लापता लेडीज' जरूर आई, पर उसका कथानक गांव पर केंद्रित न होकर, बदल गई दो दुल्हनों का था। याद नहीं आता कि आमिर खान की 'लगान' के बाद ऐसी कोई फिल्म आई हो,

'स्वदेश' में भी दिखी ग्रामीण परिवेश की झलक

जिसकी पूरी कहानी गांव पर केंद्रित रही हो। आज के दौर में जो फिल्में आ रही हैं, वो हाई-सोसायटी लाइफस्टाइल और षडयंत्रों के आस-पास घूमती कहानियां हैं। उनमें कॉरपोरेट कल्चर होता है, बिजनेस के जरिए साजिशें रची जाती हैं, कंपनियों को टेकओवर करने की चालें होती हैं।

आर्थिक कारण हैं जिम्मेदार: आज स्थिति यह है कि ज्यादातर फिल्में सौ, दो सौ और पांच सौ करोड़ के बिजनेस का लक्ष्य लेकर बनाई जाती हैं। कमाई की यही होड़ हिंदी फिल्मों से गांव के गायब होने का सबसे बड़ा कारण है। फिल्मकारों की नजर में गांव की कहानियों पर फिल्में बनाना कमाऊ विषय नहीं है। अब किसी फिल्म में गांव दिखाई भी देता है, तो किसी और संदर्भ में। मिसाल के तौर पर 'स्वदेश' जैसी फिल्म में ऐसी कोशिश की गई लेकिन यह ग्रामीण परिवेश की फिल्म नहीं थी, बल्कि स्वदेश वापसी पर आधारित थी। इस बीच पहलवानी पर 'दंगल' फिल्म आई, पर इसमें भी गांव मूल रूप में नहीं दिखा। कुछ साल पहले 'पीपली लाइव' आई थी, जो गांव की सच्चाई और समस्याओं वाली फिल्म थी। इसमें किसानों के लिए बनी योजनाओं को बाबुओं और अफसरों द्वारा हड़पने का जिक्र ज्यादा था। लेकिन बड़े तबके को यह फिल्म समझ में ही नहीं आई सो आर्थिक रूप से फायदेमंद नहीं रही।

'मदर इंडिया' में दिखा वास्तविक ग्राम्य जीवन

ग्रामीण परिवेश पर बनी हिट फिल्म 'लगान'

ग्रामीण फिल्मों का था सुनहरा दौर: सिनेमा का एक दौर ऐसा भी आया था, जब गांव और गांव वाले ही सिनेमा की पहचान हुआ करते थे। लेकिन जैसे-जैसे सिनेमा का बाजार बढ़ा, परदे से गांव गायब होते गए। फिल्मों का इतिहास टटोला जाए, तो शुरुआती फिल्मों का कथानक गांव की पगडंडियों से होकर ही गुजरा। वी. शांताराम की 'दो बीघा जमीन', विमल रॉय की 'यादगार' और 'बंदिनी,' राज कपूर की 'आवारा', 'श्री 420' और 'बूट पॉलिश' ग्रामीण परिवेश की ऐसी फिल्में थीं, जिन्होंने देश और दुनिया को वहां की समस्याओं और उनके जीवन से रूबरू करवाया था। गांव के जीवन पर बनीं इन फिल्मों में एक अलग सी महक होती थी।

धीरे-धीरे दूर हो गई गांव की महक: सिनेमा के परदे से गांव की मिट्टी की सौंधी महक ही नहीं, लोकगीत भी गायब हो गए। यह दौर एक दो सालों में नहीं आया। 80 के दशक के बाद से ही फिल्मकारों ने धीरे-धीरे गांवों की धूलभरी पगडंडी को छोड़ दिया था। फिल्मों में खेत-खलिहान, लहलहाती फसलें, हल चलाते किसान, खेत जोतते ट्रैक्टर, गांव की चौपाल और वहां की पंचायतें गायब हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म की कुछ वेब सीरीज में गांव जरूर दिखाई दिए पर उनका फोकस अपराध और अपराधियों पर फोकस होता है। वास्तव में ग्रामीण इलाकों, गांव की कहानियों और किसानों के किरदार में निर्देशक, निर्माता और यहां तक कि दर्शकों की भी रुचि नहीं है।

अब ट्रेंड पर बनती हैं फिल्में: अब तो यह हालात हैं कि गांव का जीवन परदे से लगभग गायब ही हो गया है। अब तो एक फार्मूला हिट होते ही उस जैसी फिल्में बनने लगती हैं। आजकल यही ट्रेंड बन गया है। लेकिन किसी फिल्मकार ने 'लगान' की सफलता के बाद भी उसका अनुसरण नहीं किया। ब्लॉक बस्टर सफल हिंदी फिल्म 'शोले' वास्तव में रामगढ़ गांव की कहानी थी। लेकिन इस फिल्म में भी गांव वास्तविक रूप में नहीं था। जो गांव था, वो डाकू गब्बर सिंह और बदला लेने वाले ठाकुर साहब के बीच कहीं गुम हो गया था।

रामगढ़ गांव की पृष्ठभूमि पर बनी 'शोले'

अब तो ग्रामीण जिंदगी और वहां के रीति-रिवाजों पर फिल्में बनाने के लिए पहचाने जाने वाले राजश्री प्रोडक्शंस भी संयुक्त परिवारों और उसकी साजिशों की कहानियों पर मल्टीस्टारर फिल्में बनाने लगा है। 'नदिया के पार', 'बालिका वधु' और 'गीत गाता चल' जैसी बेहतरीन फिल्में बनाने वाली यह फिल्म निर्माण कंपनी भी गांव से शहर पहुंच गई है। दरअसल, सारा मामला व्यावसायिकता के खेल का है। ऐसे में भला कौन पिछड़ना चाहेगा। इसीलिए फिल्मी पर्दे से गांव दूर होते जा रहे हैं। *